ISSN: 2583-7869

VOLUME-1 ISSUE-4, - JUNE 2023

THE PAHADI

AGRICULTURE E-MAGAZINE

THE MOUNTAIN AGRICULTURE E-MAGAZINE

"This issue is dedicated to all mountain Agripreneurs"

www.pahadiagromagazine.in

ISSN: 2583-7869

श्री देव सुमन उत्तराखण्ड़ विश्वविद्यालय

बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड़–249 199

Sri Dev Suman Uttarakhand Vishwavidhyalay

Badshahithaul, Tehri Garhwal–249 199

!! संदेश !!

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि **"द पहाड़ी एग्रीकल्चर"** द्वारा अपनी मासिक ई–पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

आपके द्वारा प्रकाशित की जाने वाली मासिक ई–पत्रिका **"द पहाड़ी एग्रीकल्चर"** किसानों को नयी–नयी जानकारियां एवं पर्वतीय क्षेत्रों के युवाओं को स्वरोजगार प्रदान करने हेतु बढ़ावा देगी। **"द पहाड़ी एग्रीकल्चर"** सभी किसानों, गैरसरकारी संस्थाओं–केंद्र एवं राज्य सरकार की किसान कल्याण योजनाओं, पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि से सम्बन्धित स्टार्ट अप्स आदि के लिए एक माध्यम का कार्य कर रहा है। मुझे आशा ही नही अपितु पूर्ण विश्वास भी है कि इस ई–पत्रिका के माध्यम से केंद्र एवं राज्य सरकार की किसान कल्याणकारी योजनाओं को जनमानस तक पहुँचाने में मदद मिलेगी।

मैं, **"द पहाड़ी एग्रीकल्चर"** की भव्यता एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित!

06/07/2023

डॉ0 (हेमन्त बिष्ट)
सहायक परीक्षा नियंत्रक

श्री हेमेन्द्र नेगी,
संस्थापक / एडिटर,
"द पहाड़ी एग्रीकल्चर"

VOLUME 01 – ISSUE 04

ISSN: 2583-7869

http://pahadiagromagazine.in

THE PAHADI AGRICULTURE : e-Magazine

- The Mountain Agriculture Magazine

- Inauguration: **1st April 2023**
- Release of 4th issue : **7th July 2023**
- Website : **http://pahadiagromagazine.in**

Annual membership form: https://ee.kobotoolbox.org/x/yvjl766S

Editorial team: http://pahadiagromagazine.in/editorial-team/

Join our WhatsApp group for further updates:

https://chat.whatsapp.com/K3vurb6WRK7KLrxWZK339S

http://pahadiagromagazine.in

Table of Contents

भाई-बहन मशरूम की खेती से कमा रहे हैं लाखों 1

दीपिका कैंन्तुरा और दीपेंद्र सिंह कैंन्तुरा, गांव श्रीकोट, ब्लॉक चिन्यालीसौड़, जिला उत्तरकाशी 1

मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण से अन्य लोगों को भी दे रहे रोजगार 5

दीपिका कैंन्तुरा और दीपेंद्र सिंह कैंन्तुरा, गांव श्रीकोट, ब्लॉक चिन्यालीसौड़, जिला उत्तरकाशी 5

एकीकृत कृषि है सफलता का मूल मंत्र 9

दीपिका कैंन्तुरा और दीपेंद्र सिंह कैंन्तुरा, गांव श्रीकोट, ब्लॉक चिन्यालीसौड़, जिला उत्तरकाशी 9

पहाड़ों में बकरी पालन : 'द हिमालयन गोट फार्म' 13

दीपक प्रसाद, गांव शाली स्टेट, ब्लॉक गरुड़, जिला बागेश्वर 13

बकरी पालन से बदली अनेक किसानों की जिंदगी 17

दीपक प्रसाद, गांव शाली स्टेट, ब्लॉक गरुड़, जिला बागेश्वर 17

बागवानी और कृषि के क्षेत्र में मिसाल बने जगमोहन राणा जी 21

जगमोहन राणा, गांव हिमरोल, पोस्ट ऑफिस कफनोल, ब्लॉक नौगांव, जिला उत्तरकाशी 21

फूलों की खेती से कमा रहे हैं लाखों 25

पूरन सिंह कन्याल, गांव अटखेत, ब्लॉक डीडीहाट, जिला पिथौरागढ़ 25

जैविक उत्पाद समूह : महिला समूहों ने रचा एक नया इतिहास 29

कुसुम बाला, गांव बड़ासी (सौड़ा सरौली) ब्लॉक रायपुर, जिला देहरादून 29

Providing sustainable livelihoods to farmers in Meghalaya 33

Meenakshi Bhardwaj, founder Aranyam Naturals 33

जड़ी-बूटी की खेती से कमा रहे हैं लाखों 36

रोशनी चंदेल गांव, नया गांव पैलियु (भूड़पुर), ब्लॉक सहसपुर, जिला देहरादून 36

जड़ी-बूटी की खेती के साथ कर रहे हैं मशरूम उत्पादन 40

रोशनी चंदेल गांव, नया गांव पैलियु (भूड़पुर), ब्लॉक सहसपुर, जिला देहरादून 40

सेब की खेती को बनाया आजीविका का साधन 43

विरेन्दर सिंह, गांव- बागी, ब्लॉक- चकराता, जिला- देहरादून 43

उत्तराखण्ड के 'पिस्यू लूण' (पहाड़ी नमक) मिल रही देश- भर में पहचान 45

संदीप पांडे, काकड़ीघाट, नैनीताल, उत्तराखण्ड 45

उन्नति स्वायत सहकारिता 47

THE PAHADI AGRICULTRE
THE MONTHLY AGRICULTURE MAGAZINE

मदन उपाध्याय, गांव करेला, ब्लॉक डीडीहाट, जिला पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड़ 47
पुष्प उत्पादन, कीवी की खेती, डेरी एवं पहाड़ी उत्पादों का आउटलेट 51
मदन उपाध्याय, गांव करेला, ब्लॉक डीडीहाट, जिला पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड़ 51
स्वायत्त सहकारिता : सहकार से प्रगति 55
दीपक प्रसाद, गांव शाली स्टेट, ब्लॉक गरुड़, जिला बागेश्वर 55
Pure and Fresh Products from Himalayas - HILANS Outlets 59
Gaurav Benjwal, Associate/Young Professional -Knowledge Management/IT, REAP-UGVS Project-Rudraprayag, Uttarakhand 59
पहाड़ों में तेज पत्ते की खेती से कमा रहे हैं लाखों 62
पूरन सिंह कन्याल, गांव अटखेत, ब्लॉक डीडीहाट, जिला पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड़ 62
सब्जी उत्पादन से कमा रहे है लाखों 66
हयाद सिंह, गांव जयकोट, पोस्ट ऑफिस कैलाश, ब्लॉक धारचूला, जिला पिथौरागढ़ 66
उत्तराखंड में अब पहाड़ों में भी गन्ने की खेती की तैयारी 70
पूरन सिंह कन्याल, गांव अटखेत, ब्लॉक डीडीहाट, जिला पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड़ 70
मिलेट्स / श्री अन्न से बना रहे हैं सौंदर्य उत्पाद 74
ऋषि भटनागर, गांव- गैड़, जिला- देहरादून, राज्य- उत्तराखण्ड 74

THE PAHADI AGRICULTRE
THE MOUNTAIN AGRICULTURE MAGAZINE

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 **Article ID: 10074**

भाई-बहन मशरूम की खेती से कमा रहे हैं लाखों

दीपिका कैंन्तुरा और दीपेंद्र सिंह कैंन्तुरा, गांव श्रीकोट, ब्लॉक चिन्यालीसौड़, जिला उत्तरकाशी

प्राय वर्षा ऋतु में छतरीनुमा आकार के विभिन्न प्रकार एव रंगों की पौधों जैसी आकृतियां अक्सर खेतों में तथा घरों के आसपास दिखाई देती हैं, जिन्हें हम मशरूम या खुम्भ कहते हैं | यह मशरूम एक प्रकार का फफूंद है प्रकृति में लगभग हजारों तरह के मशरूम पाए जाते हैं। परन्तु सभी प्रकार के मशरूम खाने योग्य नहीं होते हैं क्योंकि कुछ मशरूम जहरीले होते हैं अतः बिना जानकारी के जंगली मशरूम को नहीं खाना चाहिए।

वैज्ञानिकों के अनुसार मशरूम की लगभग 1000 किस्में हमारी धरती पर मौजूद हैं, लेकिन व्यापारिक नजरिये से मशरूम की लगभग 5 किस्में ही अच्छी मानी जाती हैं, जिनके नाम बटन मशरूम, पैडी स्ट्रॉ, मिल्की मशरूम, गेनोडर्मा, ढ़िगरी या ओयस्टर मशरूम हैं। इन सब में बटन मशरूम सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली किस्म है |

आज आपको ऐसे ही दो कर्मठ भाई- बहिन से मिलाते हैं। जिन्होंने पहाड़ की ज़ीवटता का परिचय देते हुए घरेलू स्तर पर रोज़गार के नए स्रोत विकसित किए हैं। यद्यपि आप दोनों किसी परिचय के मोहताज नही हैं। क्योंकि आपने अपने उद्यमिता एवं परिश्रम से प्रधानमंत्री जी के लोकल और वोकल योजना के संप्रत्यय को ज़मीनी हक़ीकात का रूप दिया है। जी हाँ मैं बात कर रहा हूँ उत्तरकाशी जनपद के अन्तर्गत चिन्यालीसौड़ ब्लाक के श्रीकोट गाँव के दो हुनरमंद काश्तकार और मशरूम उत्पादक दीपेन्द्र कैंन्तुरा और दीपिका कैंन्तुरा की इन दोनों ने न केवल अपने लिए रोज़गार तराशने का काम किया बल्कि नक़दी फसल से लगभग दूर हुए लोगों और अनेक किसानों को भी फिर से घरेलू उत्पाद को पुनर्जीवित करने के साथ ही स्वरोज़गार के लिए भी प्रेरित किया है।

हाल ही में महामहिम राज्यपाल से.नि. लेफ़्टिनेंट जनरल श्री गुरमीत सिंह जी ने दीपिका कैंतूरा जी को 50 हजार रूपए की प्रोत्साहित राशि दी एवं अन्य अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों द्वारा भी इनके हुनर को प्रोत्साहित किया गया ।

दीपेंद्र जी कहते हैं कि में 12th पास आउट हूँ और 9 वर्षों से मशरूम की खेती कर रहा हूँ और इसकी शुरुआत हमने 2014 से की थी इसके अलावा हम परंपरागत खेती भी करते हैं, मुझे मशरूम की खेती की जानकारी दोस्तों के माध्यम से यूट्यूब के माध्यम से शुरुआती तौर पर प्राप्त हुई और हमारे यहां कृषि विभाग में डॉक्टर अजय बिष्ट जी थे उनके मार्गदर्शन से और डॉक्टर कमल प्रखर प्रसार अधिकारी जिन्होंने हमें शुरुआत में मार्गदर्शन दिया और जहां हमें दिक्कत परेशानियां हुई वहां वहां उन्होंने साथ दिया हालांकि की 4 साल तक शुरुआत में काफी दिक्कतें रही फिर धीरे-धीरे जब हमें जानकारी प्राप्त हुई तो परेशानियां कम होती गई और शुरुआत में हमने 10 बैग से शुरू किया था जिसमें 1000 रुपए लागत आई थी और वर्तमान समय में हमारे पास 3000 बैग का हॉल और एक झोपड़ी / हट है जिसमें हम सालाना चार समय चक्र में कार्य करते हैं, और अब 12 महिने हम अनुकूलित वातावरण में मशरूम की खेती कर रहे हैं।

बटन मशरूम में हमारा शुरुआती तौर पर 45 से 75 दिन का शेड्यूल रहता है, जिसमें कि पहली फसल 45 दिन में आ जाती है और फिर हर 10 दिन के अंतराल में फसल आती है, जिसमें प्रति बैग 2.5 से 3kg मशरूम होता है और जिसमें बैग का भार 10 kg होता है, और उसके 75 दिन के बाद संपूर्ण फसल लेने के बाद बैग का वेस्ट मटेरियल को वर्मी कंपोस्ट बनाने में उसका उपयोग करते हैं जो कि 2 साल बाद हमें केसिंग के कार्य में प्रयोग हो जाता है | केसिंग में मिट्टी तैयार होती है जो ऊपर की 2 इंच परत होती है जिसमें की नारियल का बुरादा वर्मी कंपोस्ट और पेड़ पौधों की पत्तियां जो सड़ा हुआ मटेरियल होता है उसका प्रयोग केसिंग में करते हैं और यह बटन मशरूम में प्रयोग की जाती है। और इसके लिए तापमान 16° से 22° डिग्री सेल्सियस होता है।

ओएस्टर मशरूम (डिंगरी मशरूम) यह 19 से 45 दिन की फसल होती है शुरुआत में जब हमने बैग पैकिंग कर लिया तो पैकिंग के बाद 19 दिन तक इसको हम स्टोरेज में रखते हैं क्योंकि इससे फंगस सम्पूर्ण बैग में समान रूप से फैल जाता है और इनको उचित तापमान में रखते हैं, 19 दिन के बाद बेगों की कटिंग करते हैं और 19 से 25 दिन के अंतराल में पहली फसल आती है, एवं दूसरी फसल 25 से 35 दिन के अंतराल में तथा तीसरी फसल 35 से 45 दिन बाद आती है और तापमान 16 से 24 डिग्री सेल्सियस तक होता है। एवं उचित नमी भी कमरे में रखी जाती है|

शिटाके मशरूम यह 90 से 120 दिन के अंतराल में होती है और इसका लगभग 4 महीने का शेड्यूल रहता है, इस मशरूम की हम सालाना एक ही फसल लेते हैं और यह 14 से 20 डिग्री सेल्सियस तापमान में होता है |

आगे दीपेंद्र जी कहते हैं शुरुआत में हमने काफी दिक्कतों का सामना किया लेकिन कोविड के बाद हमें उद्यान विभाग के द्वारा काफी सहायता की गई जिसमें उनके द्वारा हमें मशरूम की खेती के लिए बैग मुहैया करवाए गए और उसके बाद मेरी बहन ने मेरे इस कार्य में मेरा हाथ बंटाया है, एवं वर्तमान समय में वही यह सब कुछ देख रही हैं जिसके बाद मुझे काफी मदद मिली क्योंकि कहीं जाना था अधिकारियों से मिलना है यह सब मेरी बहन ही देखती है और कॉविड के बाद फिर हमारा काम सही लेवल पर शुरू हुआ है | लेकिन इससे पहले थोड़ा प्रैक्टिकल भी था लोग कार्य भी कर रहे थे पर और लोग भी इकट्ठा थे लेकिन कोविड की वजह से यह सब कार्य थोड़ा रुक सा गया था लेकिन कोविड के बाद बहन ने जब से यह कार्य संभाला है तो हमारा काम अच्छे लेवल पर पहुंच गया है|

शुरुआत में जब मशरूम की खेती करने का सोचा तो मैंने मेरे दोस्तों से और यूट्यूब के माध्यम से थोड़ा बहुत तो जान ही चुका था लेकिन उसके बाद मैंने मशरूम की ट्रेनिंग भी ली जो कि मैंने देहरादून से बागवान समिति तथा मशरूम मुख्य प्रसार अधिकारी दो जगह से मशरूम की खेती की ट्रेनिंग ली है जो कि 7 और 15 दिन की ट्रेनिंग थी और उसके बाद मैंने अपने घर पर ही छोटे लेवल पर 10 बैग से शुरुआत किया था।

इसके अलावा हमारे यहां आत्मा प्रोजेक्ट के द्वारा मशरूम ट्रेनिंग सेंटर खुलवाया गया जिसमें हम ट्रेनिंग देते हैं इसके अलावा हम पहले भी ट्रेनिंग देते थे लेकिन आत्मा प्रोजेक्ट के अंतर्गत हमें जबसे ट्रेनिंग सेंटर मुहैया करवाया गया है तो हम 2 साल से यहां किसानों को ट्रेनिंग देते हैं।

दीपिका जी कहती हैं कि मुझे अपने भाई के साथ इस कार्य को करते हुए 5 साल हो चुके हैं और मैं कोविड के बाद इस कार्य को कर रही हूं मैं किसी कारणवस अपने बच्चों के साथ मायके में ही रह रही हूं और मुझे लगा कि मुझे अपने भाई का इस कार्य में हाथ बटाना चाहिए तो मैं कोविड के बाद निरंतर इस कार्य को कर रही हूं। और हम खुद ही मशरूम को वितरित करते हैं, मार्केटिंग / सेल करते हैं और स्कूटी के माध्यम से लगभग 30 किग्रा तक मशरूम को हम खुद वितरित करते हैं जिसमें कि उत्तरकाशी, डुंडा, चिन्यालीसौड़, ब्रह्मखाल, एवं कंडीसोर आसपास के जितने भी क्षेत्र हैं हम खुद ही वहां तक अपने मशरुम को वितरित करते हैं इसके अलावा हमारा मशरूम देहरादून तक जाता है, हम अपने क्षेत्र में अन्य महिलाओं से भी मशरूम इकट्ठा करते हैं जो अभी छोटे पैमाने पर कर रहे हैं। और उन महिलाओं को हम मशरूम का बीज / स्पान तथा ट्रेनिंग देते हैं उन्हें सिखाते हैं फिर जो उनकी फसल होती है हम उनसे ले लेते हैं या उन्हें अच्छी मार्केटिंग की सुविधा उपलब्ध कराते हैं जो महिलाएं अपने घर में ही अभी यह सब कर रही हैं, और इसमें NGO भी साथ दे रहा हैं महिलाओं को इसके अलावा हम भी प्रमोट कर रहे हैं उनको जैसे स्पान ट्रेनिंग बैग सब कुछ मुहैया करवाते हैं वह भी फ्री ऑफ कॉस्ट एवं ना ही हम यह सब किसी योजना के तहत कर रहे हैं।

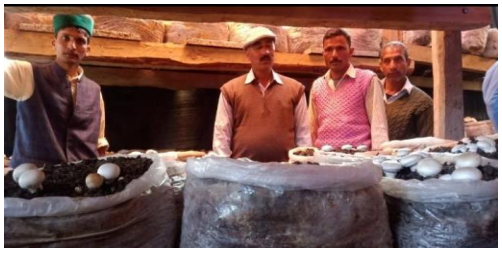

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10075

मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण से अन्य लोगों को भी दे रहे रोजगार

दीपिका कैंन्तुरा और दीपेंद्र सिंह कैंन्तुरा, गांव श्रीकोट, ब्लॉक चिन्यालीसौड़, जिला उत्तरकाशी

वर्तमान समय में मशरूम उत्पादन एवं सुनिश्चित बाजार की बड़ी समस्या है, इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए दीपिका कैंतुरा जी बताती हैं कि हमें उद्यान विभाग के द्वारा भी सहायता मिली है जिसमें कि उन्होंने 80 से 100 बैग हमें दिए हैं उन्हीं के माध्यम से हमने अपने आसपास के किसानों को ट्रेनिंग दी है, तो कहीं ना कहीं हमें लगा कि यह कार्य करना चाहिए क्योंकि महिलाओं को मार्केटिंग की काफी समस्याएं आती हैं तो वह समस्या भी हमने दूर कर दी है, जो भी महिलाएं की फसल होती है तो वह फसल हम उनसे खरीद लेते हैं और फिर आगे उन्हें बेच देते हैं |

दीपिका जी कहती है कि प्रारम्भ में हमारे क्षेत्र में हमने ही मशरूम की शुरुआत की थी, लेकिन वर्तमान समय में हम काफी लोगों की मदद कर रहे हैं उन्हें मशरूम की खेती के बारे में बता रहे हैं, उन्हें पूरी सुविधाएं दे रहे हैं और मार्केटिंग की सुविधाएं उपलब्ध करवा रहे हैं, तो आज के समय में बहुत से ऐसे किसान हैं जो मशरूम की खेती कर रहे हैं, मेरे भाई जब इस कार्य को कर रहे थे तो लोगों को पहले समझाया क्योंकि लोग पहले समझते थे कि यह मशरूम सिर्फ जंगल में ही होता है क्योंकि कहीं पर कोई फार्म देखा नहीं था। और उन्हें पता नहीं था कि मशरूम का उत्पादन घर पर भी होता है, तो वह चीजें लोगों को बताई उन्हें समझाया और भाई ने लोगों के घर में खुद मशरूम मशरूम की सब्जी को बनाया और उन लोगों को मशरूम की सब्जी बनाकर खिलाई और यकीन दिलाया कि यह एक सब्जी है, जिससे हम घर में ही उगा सकते हैं और जिससे हम खेती करके अच्छा मुनाफा ले सकते हैं तब जाकर लोगों ने वह बात समझी जानी फिर जाकर वह लोग भी मशरूम की खेती करने लगे, और अब 40 से 50 लोग हमसे जुड़े हुए हैं जो मशरूम की खेती कर रहे हैं।

इसके अलावा हम मशरूम के उत्पादन के साथ इसका प्रोडक्ट बना रहे हैं जिसमें सिर्फ हम अभी अचार बना रहे हैं, और हम अभी इस बारे में योजना बना रहे हैं कि ओर बड़े पैमाने पर इसके प्रोडक्ट बनाएं क्योंकि आज के समय हमारा प्रतिदिन का उत्पादन 1.5 से 2 क्विंटल है |

जिसमें हम लोगों से भी फसलें इकट्ठा करते हैं और खुद भी उत्पादन कर रहे हैं और बाहर से भी मंगवाते हैं, और जहां हमें ज्यादा समस्या आती है या हमारे पास मशरुम बचता है तो उसका हम अचार बना लेते हैं, इसके अलावा जो ओयस्टर मशरूम है उसे हम सोलर ड्राई के द्वारा सुखाकर रख देते हैं **जो हमें उद्यान विभाग के द्वारा दिया गया था।**

आगे दीपिका जी कहती हैं कि कोविड के समय भी हमने इस कार्य को नहीं छोड़ा समस्याएं बहुत आई जिसमें मुख्य समस्या मार्केटिंग की थी, जिसके लिए हमने मशरूम को सोलर ड्राई के द्वारा उसे ड्राई किया, हमने फिर घर-घर जा के वितरित किया इसके अलावा पहले गांव में घरों में लोग खेती करते थे पर अपना ज्यादा समय खेती-बाड़ी में नहीं दे पाते थे, लेकिन मशरूम की खेती ऐसी है जिसे हम घर में कर सकते हैं और अब लोग इसी की खेती को ही ज्यादा वैल्यू दे रहे हैं और अब हमें फोन करते हैं कि मशरूम का बीज मंगवाते हैं, हमारे यहां आते हैं, देखते हैं, ट्रेनिंग लेते हैं, सीखते हैं तो काफी लोग हमारे क्षेत्र में अब मशरूम की खेती के प्रति जागरूक हो गए हैं एवं अच्छे लेवल पर खेती कर रहे हैं और भूसा हमारे यहां मिल जाता है। एवं मशरूम का बीज हम उन लोगों को उपलब्ध करवा देते हैं, और **अभी हमें कृषि विभाग के द्वारा एक आउटलेट भी मिला हुआ है** जहां हम फसलों को इकट्ठा करते हैं और लोकल उत्पादन को हम लोगों से इकट्ठा वही करते हैं और वहीं से ही हम अपना मशरूम व अन्य फसलें वितरित करते हैं जैसे दूरदराज क्षेत्र के लोग वहीं आ कर छोड़ देते हैं, उसके बाद हम उसे मार्केट तक पहुंचाते हैं मशरूम के अलावा हम लोगों से सब्जीयां, मोटे अनाज भी एकत्रित करते हैं और फिर उसे आगे मार्केट में बेच देते हैं।

आगे दीपिका जी कहती है। मशरूम की खेती करने के लिए बहुत ज्यादा जगह की जरुरत नहीं होती है। अपने घर की किसी खाली जगह में भी आराम से उगाए जा सकते हैं। ग्रामीण महिलाओं के लिए भी मशरूम की खेती उनकी पारिवारिक आय बढ़ाने में मददगार हो सकती है। महिलाएं घर में रहकर मशरूम की खेती को व्यापार के रूप में अपना सकती हैं। इसके साथ ही किसान भाई भी इसको छोटे स्तर पर शुरू करके अपनी अतिरिक्त आय का जरिया बना सकते हैं।

मशरूम का व्यापार करने के तरीके मशरूम की खेती का व्यापार दो तरीके से किया जाता है, या तो अपनी कंपनी बनाकर मशरूम का व्यापार शुरु कर सकतें हैं या मशरूम की खेती करके।

और भूमिहीन किसानों के लिए अच्छा विकल्प है मशरूम उत्पादन का दीपिका जी अब अपने गांव के साथ ही आसपास के इलाकों के किसानों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन गई हैं। **उनके क्षेत्र के किसान भी अब मशरूम उत्पादन की तकनीक जानने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र से संपर्क करने लगे हैं**। मशरूम उत्पादन से न सिर्फ़ ग्रामीणों को पोषण मिलता है, बल्कि उनकी आमदनी बढ़ने से जीवन स्तर में भी सुधार होता है। यही नहीं, यह उन किसानों के लिए अच्छा विकल्प है, जिनके पास खेती योग्य बहुत कम भूमि हैं, क्योंकि मशरूम उत्पादन के लिए अधिक जगह की ज़रूरत नहीं होती है। **दीपिका जी की तरह मशरूम की वैज्ञानिक खेती करके आप भी अपनी आमदनी में इज़ाफा कर सकते हैं।**

इसके अलावा हरिद्वार में **मशरूम फेस्टिवल** में हमें मंच मुहिया हुआ, जहाँ हमने अपना स्टॉल लगाया और अपने मशरूम की खेती को प्रमोट भी किया था जो कि 18, 19 और 20 अक्टूबर 2022 को हुआ था | और वहां से हमें काफी अच्छा स्टार्टअप मिला वहां काफी लोगों ने इसे पसंद किया बहुत से लोग हमसे जुड़े भी और हमें भी वहां से बहुत कुछ सीखने को मिला और मशरूम फेस्टिवल के बाद हमारा काफी अच्छा इंप्रूवमेंट हुआ है और जो जानकारी का अभाव था वह ऐसे ही जगह-जगह स्टाल लगाकर पूर्ण रहा है, इसके साथ उत्तरकाशी में सैनिक दीपावली मेले में भी हमें मंच मुहैया करवाया गया था एवं वहाँ भी हमने अपना स्टॉल लगाया था और हमें सम्मानित भी किया गया |

हमें जहां भी मौका मिलता है कृषि मेलों एवं प्रदर्शनीयों आदि जगह पर हम अपना स्टाल लगाते हैं और अपने मशरूम को प्रमोट करते हैं।

दीपेंद्र जी कहते हैं कि इसको हम और बड़े पैमाने पर करेंगे जिससे इस चीज से ज्यादा से ज्यादा लोग जुड़े और ज्यादा से ज्यादा लोग इससे प्रेरित हो और मशरूम की खेती हमारे लिए पार्ट टाइम जॉब भी हो सकती है और इसे स्कूल के बच्चे भी कर सकते हैं जिसमें वह अपना खर्चा निकाल सके जिसमें कम बैग से भी वह शुरुआत कर सकते हैं।

चुनौतियाँ:

दीपिका जी कहती है कि हमारे यहाँ प्रोडक्शन कम है और मार्केट डिमांड ज्यादा है, इसलिए हम चाहते हैं कि उत्पादन क्षेत्र ज्यादा बड़े क्योंकि मशरूम बहुत नाजुक होते हैं और समय के हिसाब से उत्पादन करना पड़ता है और समय के हिसाब से इसे वितरित भी करना पड़ता है, मशरूम की मार्केट डिमांड ज्यादा होने के कारण हम आसपास के क्षेत्रों से जो महिलाएं मशरूम उगा रही हैं तो इनसे भी इकट्ठा करके लाते हैं जिनसे उन्हें भी फसल का उचित दाम मिल जाता है और हम भी उसमें अच्छा मुनाफा ले लेते हैं |

दीपेंद्र जी कहते हैं कि शुरुआत हमने टूटी-फूटी झोपड़ी से की थी और धीरे-धीरे जैसे आमदनी प्राप्त हुई तो हम इसमें ग्रोअप करते रहे और अभी तक हम इस चीज़ में इन्वेस्ट कर ही रहे हैं, एवं हमने जो भी किया वह अपनी मेहनत से किया है, जिसमें विभागों द्वारा भी सहायता की गई लेकिन उस लेवल पर सहायता नहीं मिल पाई है जैसे आत्मा प्रोजेक्ट के अंतर्गत ट्रेनिंग के लिए स्कूल मुहैया करवाया गया जो कि 29 हजार तक का प्रोजेक्ट था जिसमें सिर्फ 10 हजार ही हमें मुहिया करवाया गया, इसके अलावा उद्यान विभाग द्वारा भी काफी सहायता मिली है जो कॉविड के बाद जैसे बैग मुहैया करवाना तथा जो कि विभागों द्वारा कोविड के बाद ही सहायता मिली जबकि कोविड से पहले हमारे तक कोई योजना नहीं पहुंचती थी, लेकिन कोविड के बाद हमें काफी सहायता मिली है और इससे पहले हमें विभाग की तरफ से सूचना आती थी कि हमारे यहाँ आइये एवं अपने प्रोडक्ट का स्टॉल लगाईये।

Article written by: Vipin Soni

Editor "The Pahadi Agriculture" e-Magazine

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10076

एकीकृत कृषि है सफलता का मूल मंत्र

दीपिका कैंन्तुरा और दीपेंद्र सिंह कैंन्तुरा, गांव श्रीकोट, ब्लॉक चिन्यालीसौड़, जिला उत्तरकाशी

एकीकृत कृषि प्रणाली अपनाकर आज बहुत से किसानों ने अपनी एवं अन्य किसानों की भी दशा बदली है, इसी कड़ी में मशरूम उत्पादन के साथ कृषि एवं उद्यानिकी में भी एक मिशल कायम की है दीपेंद्र एवं उनकी बहन दीपिका कैंतुरा ने, वह मशरूम उत्पादन के अलावा सब्जी उत्पादन और मोटे अनाज की खेती भी करते हैं एवं वह बताते हैं कि हमारा क्षेत्र मंडवा व जंगोरे का हब है, हम चाहते हैं कि समय-समय पर सरकार के द्वारा सही बीज उपलब्ध हो, जो आने वाले समय में अच्छा उत्पादन हो सके और किसानों की आय दोगुनी हो सके, एवं अभी हाल ही में हमें कृषि विभाग के द्वारा बीज दिया गया जो कि लगभग 10 किग्रा के लगभग है, हमने लोगों को गाइड किया कि आधा-आधा किलो इस

बार तुम लगाओ और 1 साल बाद इन्हीं किसानों से 1 किग्रा बीज वापस लेना है, और फसल की जानकारी बीच-बीच में देते रहना है, यह सम्पूर्ण काम ऑनलाइन चल रहा है तो इसका हम पैटर्न बना रहे हैं और अगर सहयोग मिलता रहे बीज मिलते रहे तो जरूर उत्पादन भी बढ़िया होगा और जो बीज हम 1 साल बाद 1kg वापस लेंगे उसको हम आगे किसानों को फिर आधा-आधा kg देंगे जिससे समय चक्र भी चलता रहे और सर्कल भी बढ़ता रहे।

इसके अलावा दीपेंद्र जी कहते हैं कि सब्जी उत्पादन का कार्य भी हम करते हैं जो कि अच्छा चल रहा है और सब्जी उत्पादन हम मौसम आधारित करते हैं जिसके लिए हमने अभी वर्तमान में एक पॉलीहाउस लगाया हुआ है जो हमें उद्यान विभाग के द्वारा कोविड के बाद शुरुआत में दिया गया और हमारे क्षेत्र में यह पहला पॉलीहाउस लगा था, एवं हमने स्ट्रौबरी के पौधे लगाए थे, हमारे क्षेत्र में उस समय जिला अधिकारी मयूर दीक्षित जी भी आए थे पॉलीहाउस में और उसके छत में भी हमने स्ट्रॉबेरी लगाया हुआ था। काफी अच्छा कार्य रहा स्ट्रॉबेरी उत्पादन का एवं वर्तमान समय में भी हम स्ट्रॉबेरी की खेती कर रहे हैं और इन सब के लिए हमें अभी आउटलेट चिन्यालीसौड़ में दिया गया है, जहां से अपने सभी उत्पादों को हम अलग-अलग जगह वितरित करते हैं और हम घर-घर जाकर भी वितरित करते हैं, यदि हमें शादियों पार्टियों से भी आर्डर आते हैं तो वहां भी हम खुद ही जाकर पहुँचते हैं।

आगे दीपेंद्र जी कहते हैं कि इसके अलावा हम फूलों की खेती भी करते हैं जिसमें हमने सभी प्रकार के फूल और औषधीय पौधे भी लगाए हुए हैं और लोगों से कार्य भी करवाते हैं| लोगों को सिखाते भी हैं और हम नई-नई चीजों में रिसर्च करते रहते हैं जैसे हमने एक पौधा लाया उसी से ही बीज जनरेट करके बीज वितरित भी किए हैं और नर्सरी तैयार करके अपने ही क्षेत्र में पौधे भी देते हैं।

हमें अभी कृषि विभाग के द्वारा पॉलीहाउस मुहैया करवाया है जो कि बहुत जल्द ही लग जाएगा फूलों में सभी प्रकार के फूल औषधियों में पत्थरचट्टा, कड़ी पत्ता इत्यादि औषधीय पौधों की खेती कर रहे हैं इसके अलावा हम केसर में भी रिसर्च कर रहे हैं और इसकी

डिमांड हमारे यहां शादी पार्टियों में ही आ जाती है और हम अपने यहां से ही इसे वितरित करते हैं, अभी औषधीय पौधों की प्रोसेसिंग चल रही है और इसके लिए हमारे क्षेत्र में मार्केट नहीं है और हम सरकार से यही चाहते हैं कि सरकार हमारे लिए औषधीय पौधों का बाजार भी मुहैया करवाएं।

अभी हाल ही में हेस्को के सहयोग से कम लागत की मशरूम यूनिट बैंबू हट का निर्माण किया है, जिसमें मशरूम के सभी प्रकार की प्रजातियां का उत्पादन किया जा रहा है इस प्रकार के कार्य पर्वतीय युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं, **यह एग्रो टूरिज्म को बढ़ावा देने का भी सफल माध्यम बन सकता है।**

हाल ही में दीपिका जी ने साइकिलिंग यात्रा भी की थी जो कि मुंबई से देहरादून तक की 2200 किलोमीटर की यात्रा थी, यह यात्रा पर्यावरण से संबंधित थी जिसमें 'प्रकृति से प्रगति पथ तक' यात्रा थी, यह 5 नवंबर 2022 को आयोजित हुई एवं पर्यावरण से संबंधित थी, यह विख्यात पर्यावरणविद पद्मभूषण डॉ अनिल प्रकाश जोशी के सानिध्य में हुई थी, इन्होंने ही अपनी संस्था के माध्यम से हमें एक हट दिलवाया था, जिसमें 6 फीट की गास लगी हुई है जो कि नैनीताल से मुहैया करवाई गई थी और इसमें हम मशरूम उत्पादन कर रहे हैं जिसका रिजल्ट बहुत अच्छा आ रहा है |

दीपिका जी कहती है कि हमारे निरंतर प्रयास से हमें डिस्टिक लेवल पर कई मंचों से सम्मानित किया जा चुका है, और विश्व गंगा धरोहर मंच के द्वारा भी हमें सम्मानित किया जा चुका है और दीपेंद्र जी को भी उद्यान विभाग के द्वारा हल्द्वानी में सम्मानित किया जा चुका है। इसके अलावा सौम्य काशी रोटरी क्लब के द्वारा भी उत्कृष्ट कार्य करने

पे दीपिका जी को सम्मानित किया जा चुका है । विश्व पर्वत दिवस पर साइकिलिंग यात्रा करने के लिए दीपिका जी को पर्वत रत्न सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है|

भविष्य हेतु योजना : दीपिका जी कहती है कि मैंने अपनी आजीविका चलाने के लिए गोल्ड लोन लिया है जिसमें हम यह चाहते हैं कि हम अपने स्ट्रक्चर बढ़ाएं और जो मटेरियल हम बाहर से इकट्ठा कर रहे हैं क्यों ना उसको हम यहीं पर लेकर उसके अलग-अलग उत्पाद बनाकर लोगों को रोजगार दें और जो हमारे गर्मियों के यह 2 से 3 महीने होते हैं उसके लिए हम यहां AC प्लांट लगवाएँ और सरकार के प्रोजेक्ट के अंतर्गत इस हेतु 10 लाख तक का ही प्रोजेक्ट जिले में आता है जो यहाँ तक नहीं पहुंच पाता है और हमारी सरकार से यही निवेदन है कि हमें प्रोजेक्ट में सहायता दें जिससे हम लोगों को रोजगार दे सकें अभी भी हम रोजगार दे रहे हैं पर अभी कम मात्रा में है और अभी ऐसे भी लोग हैं जो सिर्फ 2 से 3 kg तक ही मशरूम उत्पादन कर पाते हैं तो हम चाहते हैं कि हमारे क्षेत्र में जैसे वातावरण अच्छा है 12 महीने यहां मौसम अच्छा रहता है बस 2 महीने यहां समस्या रहती है जिसमें फंगस, बीमारियां, बबल्स आने लगते हैं और हम चाहते हैं यह प्लांट बड़ा हो और लोगों को रोजगार दे पाएँ, जिसके लिए हमें सरकार की सहायता चाहिए और प्रोडक्ट को लेकर हमने भविष्य में सोचा है कि इसको और बड़े पैमाने में करें क्योंकि इसका महिला अच्छा रिस्पांस दे रही है और इसका स्केल अच्छा है, इसे बनाने की आसान प्रक्रिया भी है और इस हेयु हमारे क्षेत्र की महिलाएँ कार्य कर रही हैं, क्योंकि हमारे क्षेत्र में महिलाएं खेती नहीं कर पा रही है जिसकी वजह से यह मशरूम की खेती की तरफ ज्यादा ध्यान दे रही हैं, और मैंने काफी जगह इस बारे में बात भी रखी है सरकार इस हेतु साथ दे रही है लेकिन महिलाओं को अच्छे तरीके से सहायता नहीं मिल पा रही है और खेती-बाड़ी में हमारे क्षेत्र में जंगली जानवरों का अधिक प्रकोप है जिस वजह से भी लोग मशरूम की खेती को कर रहे हैं इसके अलावा हम मशरूम से बिस्किट, पाउडर, अचार, पापड़ आदि बनाने की योजना बना रहे हैं और इसी प्रोजेक्ट के लिए सरकार हमें उतना सहयोग नहीं कर पा रही है।

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10077

पहाड़ों में बकरी पालन : 'द हिमालयन गोट फार्म'

दीपक प्रसाद, गांव शाली स्टेट, ब्लॉक गरुड़, जिला बागेश्वर

प्राचीन समय से ही बकरी पालन दूध और मांस के लिए किया जाता रहा है बकरी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जिसे किसान एवं पशुपालक आसानी से शुरू कर सकते हैं। बकरी को गरीब आदमी की गाय या मिनी गाय कहा जाता है। क्योंकि इसमें बहुत कम लागत की आवश्यकता होती है। इसका गरीबों की आमदनी में बहुत बड़ा योगदान होता है। भूमिहीन या सीमांत किसानों के लिए बकरी पालन एक नियमित आय का स्रोत हो सकता है।

उच्च रोग प्रतिरोधक क्षमता, कम प्रबंधन लागत, जुड़वा या तीन बच्चे प्रतिवर्ष देने की विशेषता, इत्यादि गुण बकरी पालन को अधिक फायदेमंद बनाते हैं यदि किसान बकरी पालन को वैज्ञानिक तरीके से करें तो उसकी आय दो से तिगुनी हो सकती हैं |

बकरी पालन पौराणिक समय से ही पशुपालन का एक अभिन्न अंग रहा है। भूमिहीन कृषि श्रमिक, छोटे सीमांत किसान तथा सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों में बकरी पालन की लोकप्रियता अत्यधिक है। बहुउद्देशीय उपयोगिता एवं सरल प्रबंधन पशुपालकों में बकरी पालन की ओर बढ़ते रुझान के प्रमुख कारण हैं। भारत में बकरियों की संख्या 1351.7 लाख है, जिसमें से अधिकांश (95.5 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्रों में हैं। केवल अल्प भाग (4.5 प्रतिशत) ही शहरी क्षेत्रों में है। भारत में होने वाले कुल दुग्ध और मांस उत्पादन में बकरी का उत्कृष्ट योगदान है। बकरी का दूध और मांस का भारत में उत्पादित कुल दुग्ध और मांस में क्रमशः 3 प्रतिशत (46.7 लाख टन) और 13 प्रतिशत (9.4 लाख टन) हिस्सा है। ये आंकड़े स्पष्ट रूप से भारतीय समाज में बकरी पालन के व्यवसाय के महत्व को प्रमाणित करते हैं।बकरी पालन व्यवसाय से लाभ कमाने के लिए बकरियों में पोषण, स्वास्थ्य एवं प्रजनन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर बकरी पालन से अधिक लाभ कमाया जा सकता है।

आज हम ऐसे ही किसान के बारे में बात करेंगे जो बकरी पालन से लाखो कमा रहे हैं। दीपक प्रसाद जी शाली स्टेट गांव, ब्लॉक गरुड़, जिला बागेश्वर के रहने वाले है। दीपक जी कहते हैं कि मैं ग्रेजुएट पास आउट हूं 2016 में सहकारिता में एक प्रोजेक्ट आया था जो गोट ट्रस्ट लखनऊ के द्वारा यहाँ पर उस प्रोजेक्ट में काम हुआ। और में इस प्रोजेक्ट में CLM कमेटी लाइव स्टॉक मैनेजर के पद पर था। यहां पर हमने इस क्षेत्र का सर्वे किया यहां की भौगोलिक स्थिति क्या है उसके बारे में जाना यहां बकरी पालन को उस समय फोकस किया जा रहा था।

और इसकी ट्रेनिंग हमें द गोट ट्रस्ट लखनऊ से दिलाई गई। फिर उसके बाद हमने यहां अपने क्षेत्र में बैच लेबल पर जो हमारे समूह बने थे आजीविका फेडरेशन में उन समूहों के साथ हमें जोड़ा गया। और उन ग्रुपों में जो हमारी बकरियों की सहकारिता थी जैसे संजीवनी आजीविका स्वयं सहकारिता दूसरी हिमगिरिराज स्वयं सहकारिता कौसानी इन दो सहकारिताओं का मेरे पास कार्यभार था।

तो हमारे क्षेत्र में जो बकरी पालक थे उन लोगों को हम फास्टैग की सेवाएं देते थे उसके लिए हमारे पास पशु सखी ली गई थी कि हर घर हर गांव लेवल पर बकरियों की देखरेख के लिए पशु सखी की व्यवस्था की जा सके जिसके लिए हर ग्राम सभा में 1-1 महिलाएं हमने पशु सखी रखी थी अगर बकरी को अचानक कोई दिक्कत आ गई तो वह उन्हें उपचार और देखरेख कर सके जिससे बकरी को तत्काल उपचार मिल जाता था उसके बाद अगर ज्यादा दिक्कत आती थी तो मैं वहां जाकर उनको सेवाएं देता था|

आगे दीपक जी कहते हैं बकरी पालन में हमने लोगों को बकरियां खरीद कर दी सहकारिता के माध्यम से उनको बकरियां दी और उसका उत्पादन कैसा होगा उनको ट्रेनिंग दी कि कैसी बकरियां हमने खरीदनी हैं और इसमें क्या-क्या फायदा होता है, उसके बीमा के बारे में बताया और बकरियों का बाड़ा कैसा होना चाहिए चारा दाना पानी इन सब चीजों कि हम लोगों को ट्रेनिंग देते थे और बकरियों के लिए हम बकरी दाना भी बनाते थे और उनको देते थे। और इसके अलावा दवाइयां, डी वर्मिंग वैक्सीनेशन इसका काम हम लोग करते थे, और अगर ज्यादा उत्पादन हो गया लोगों का तो उसको बेचने के लिए गोट ट्रस्ट से हमें मार्केटिंग की ट्रेनिंग भी दी गई थी और हम पहले स्थानीय क्षेत्र में एक-एक बकरियां करके बेचते थे तो हम उसको बड़े लेवल पर करने लगे उसे हमने एक लोकल बाजारीकरण का रूप दिया जैसे कि लोकल माल एक जगह इकट्ठा करके उसे हम फिर आगे बेचते थे, पहले यहां लोग ऐसे ही बकरियों को बेच देते थे बिना किसी तोलमोल के लेकिन बकरियों को जब कसाई लेने आता था अपने मनमाने रेट बोलता था तो किसानों को नुकसान होता था, लेकिन इसके विपरीत हम उसको तोल-मोल कर बेचते थे, तोल के उसका फिक्स एक रेट करते थे और किलो के हिसाब से बेचते थे और किसान को भी इससे फायदा होता था|

और ले जाने वाला जो होता था उसको भी फायदा होता था और हम किसानों के लिए ही काम करते हैं तो और इस प्रक्रिया से आगे काफी अच्छा फायदा मिला। जिसकी वजह से लोग हमारे साथ जुड़े लोगों को पहले जानकारियां नहीं थी लेकिन जब उन्हें धीरे-धीरे पता चला कि हमें यहां से फायदा हो रहा है तो उन्होंने और ज्यादा बकरियां देना हमें शुरू किया उसी के माध्यम से अभी हम यहां 8000 बकरियां बेच चुके हैं और जैसे कि अभी हिमाचल प्रदेश में एक और संस्था है उसको भी हमने अभी बकरियां बेची हैं एवं देहरादून में और अलग-अलग जिलों में हमारे यहां से बकरियां जाती हैं इसके अलावा अल्मोड़ा में भी बेची।

जिसमें हम अपने यहां गद्दी बकरी को पालते हैं क्योंकि गद्दी बकरी का हमारे पहाड़ों में ज्यादा उत्पादन होता है |

आगे दीपक जी कहते हैं कि मैं एक बकरियों का ट्रेडर भी हूँ। गोट ट्रस्ट लखनऊ से मुझे 2018 में 16 राज्यों में प्रथम पुरस्कार दिया गया जिसमें 10,000 रुपये और एक ट्रॉफी भी दी गई, बकरी पालन को बढ़ावा देने के लिए मुझे यह पुरस्कार मिला था, और डिस्ट्रिक्ट लेवल पर मुझे इसी बार 2023 में पुरस्कार भी मिला है यह भी बकरी पालन को बढ़ावा देने के क्षेत्र में मिला है और हम लोगों को जानकारी देते हैं और बकरियों का बीमा करवाते हैं जिससे लोगों को नुकसान ना हो बकरी पालन के क्षेत्र में अगर कोई नुकसान होता है तो उसके लिए उसकी रिकवरी भी बीमा के माध्यम होती है, और अभी मैंने अपना एक फर्म बनाया है जिसका नाम '**द हिमालयन गोट फार्म**' है जिसका रजिस्ट्रेशन भी मैंने करवा लिया है और अभी वर्तमान समय में जितने भी बकरियां में खरीद के लाता हूँ तो मैं यहीं पर उसे स्टॉक करके रखता हूँ फिर उसके बाद आगे उन्हें मार्केट तक पहुंचाता हूं और मैं अपने साथ और किसानों को जोड़ना चाहता हूं अभी हमारे यहां क्षेत्र में गॉट वैली करके प्रोजेक्ट आया है उसमें भी काम करना है किसानों को बकरियां देनी है जिससे उनकी आय में वृद्धि हो और मुझे यह कार्य करते करते 7 वर्ष हो गए हैं। और मैं यहां 2500 परिवारों के साथ कार्य कर रहा हूँ।

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10078

बकरी पालन से बदली अनेक किसानों की जिंदगी

दीपक प्रसाद, गांव शाली स्टेट, ब्लॉक गरुड़, जिला बागेश्वर

बकरियों को चलता फिरता ए. टी. एम. की संज्ञा भी दी गयी है एवं पहाड़ी क्षेत्रों में बकरी पालन को एक अधिक आय देने वाला व्यवसाय भी माना जाता है |

'द हिमालयन गोट फार्म' के निदेशक दीपक जी कहते हैं कि बकरियों की देखरेख का विशेष ध्यान रखना होता है जिसके लिए जब पहले हम बकरी लेकर आते हैं तो उसके लिए हम सबसे पहले बकरी का चयन करना अति आवश्यक होता है सबसे पहले तो हमें कैसी बकरी रखनी है जो यहां अच्छी तरह से फल-फूल सके उसे कोई दिक्कत ना हो यहां के मौसम और वातावरण में घुल मिल सके और खरीदते समय हमें ध्यान रखना होगा कि उसके पैर टेड़े ना हो। चयन करने के बाद बकरी का जो बाड़ा होता है वह हमारा ऊंचे स्थान पर होना चाहिए

और जो बकरी का मल-मूत्र होता है उसके निकासी की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए और खिड़कियां सूर्य की ओर होनी चाहिए जिससे सूर्य की किरणें अंदर आ सके और बैक्टीरिया पैदा ना हो सके, हवादार कमरा होना चाहिए और उसके बाद हमें बकरियों का बीमा करवा देना चाहिए उसके बाद उसके खान-पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए मैं खुद भी बकरी का दाना बनाता हूं लेकिन बकरी को उसके शरीर भार के अनुसार दाना देना चाहिए और बकरी ऐसी प्राणी है जो अपने स्वाद अनुसार चरती है और उसे हाइट वाला चारा पसंद होता है।

इसके अलावा हम मेडिकल की व्यवस्था भी करते हैं जैसे पेट के कीड़े की दवाई देते हैं इसे हम 6 महीने में देते रहते हैं जैसे हमने प्रथम चरण में दवाई दे दी उसके ठीक 22 दिन बाद फिर देते हैं जो बकरी के पेट में अंडे होते हैं 22 दिन बाद वह अंडे बच्चे बनेंगे तो अगर हम 22 दिन की दवाई को रिवाइज करके देंगे तो वह अंडे जिनसे बच्चे बने हैं वह मर जाएंगे, फिर 3 माह के बाद दवाई देंगे और इसमें भी दवाई दो प्रकार की होती हैं जैसे

कि फैनमिल्डा जोल और एन्नामिलडा जोल जो गाभिन बकरी है उसके लिए अलग दवाइयां देनी पड़ती हैं तथा जो गाभिन नहीं हैं उसके लिए अलग दवाई देनी पड़ती हैं,इसके साथ वैक्सीन भी बकरियों में लगता है जो पीपीआर का होता है जो कि एक महामारी की वैक्सीन है जिसमें बकरियों की मृत्यु दर कम रहती है जो कि 3 साल में एक बार लगता है और इसके अलावा एफ. एम. डी. का छह छह माह में एक टीका लगता है, अगर कोई बकरी कमजोर हो गई हो तो आंख की जो पलकें होती हैं वह थोड़ा सा अंदर की तरफ दबानी पड़ती है जिससे यह पता चलता है कि खून की कमी होगी तो सफेद आंख होती है अगर लाल है तो खून बरकरार है। पेट में कीड़े हैं तो एक तरीका यह भी है कि उसके ऊपर हाथ फेर दो बाल झड़ेंगे तो समझ जाओ कि बकरी के पेट में कीड़े हैं और बीमार बकरियों में रूखापन, चमक नहीं होगी पूछ नीचे की ओर होगी।

आगे दीपक जी कहते हैं कि इनको बेचने की प्रोसेस हमने **पशु बाजार डॉट कॉम** हमारी वेबसाइट है हमने उसमें बकरी की फोटो ले लेते हैं बकरी की ऊंचाई, चौड़ाई और लंबाई ले लेते हैं और बकरी का हम कितने ब्यांत की है यानी कि एक बार गाभिन हुई है या दो बार, और उसकी उम्र की पहचान हम उसके दांतो से करते हैं अगर दो दांत बकरी के होंगे तो वह 1 साल की हो गई है और टोटल बकरी के 8 दांत होते हैं और जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ेगी उसके दांत भी बढ़ते रहेंगे और उसको बेचने के लिए हम अपनी वेबसाइट में ऐड कर देते हैं फिर उसको कस्टमर देखते हैं, उसका प्राइस हम डालते हैं कि किसान का प्राइस क्या है और हमारा प्राइस क्या है फिर लोग देखते हैं फिर हमें मेल करते हैं डिमांड करते हैं कि इतनी बकरियां हमें चाहिए तो हम रेट तय करते हैं शरीर भार के अनुसार फिर हम उसे आगे बेच देते हैं, 50 प्रतिशत पैसे हम पहले ही मंगवा देते हैं और पिछले साल 220 केजीके हिसाब से मैंने उत्तराखंड सरकार को भी बकरियां बेची थी।

भविष्य हेतु योजनाएँ:

दीपक जी कहते हैं कि भविष्य में मेरा यह प्लान है कि बकरियों की हमारे पहाड़ों में बहुत आवश्यकता होती है, **पूजा पाठ के तौर पर जो हमारा कल्चर है** उसके अनुसार भी पहाड़ों में बकरियों की बहुत आवश्यकता होती है हम बकरियों को तो पालेंगे ही साथ ही हमने भविष्य में इसके **किड्स नर्सरी** के बारे में भी सोचा है उच्चतम नस्ल की बकरी जैसे सिरोही, जमुनापारी, लोकल, ब्लैक बंगाल, तोता परी, और अभी गद्दी नस्ल तथा सिरोही पर काम चल रहा है, इसके अलावा हम उच्चतम नस्ल की बकरियों का पालन भी करेंगे और भविष्य

में इसमें और लोगों को जोड़ना है और जो गद्दी बकरी है यह हिमालय क्षेत्र में ही पाई जाती है जो कि बड़े बालों वाली बकरी होती है और इसके बाल भी काम आते हैं जिसकी **दन और कंबल आदि बनाते हैं** और एक फायदा किसान का यह भी होता है, और **इसके गोबर से संजीवनी जैविक खाद बनती है** जिसमें नीम, मुर्गी का वीट बकरी का गोबर गोमूत्र से सड़ाते हैं जिससे एक जैविक खाद तैयार होती है| और इसका दूध 80₹ लीटर तक बिकता है जो कि डेंगू जैसी बीमारी के लिए बहुत फायदेमंद होता है और इसके दूध से साबुन भी बनता है तथा इसके 1 किलो घी की कीमत 4 हजार रुपये है जो सब हम अभी भविष्य में यह करने की योजना बना रहे हैं और इससे हमारा काम चल रहा है।

और पिछले साल हमने प्रोजेक्ट के माध्यम से 200 सिरोही बकरियां इस क्षेत्र में बांटी और बकरी पालन से विभिन्न फायदे होते हैं।

आगे दीपक जी कहते हैं कि '**महात्मा गांधी जी ने बकरी को गरीब की गाय कहा है'** अगर इसमें नुकसान भी हो जाता है तो इतनी बड़ी समस्या नहीं आती है, जैसे 50 हजार की भैंस मर जाती है तो किसान दोबारा उसे नहीं ले पाएगा अगर बकरियों से नुकसान भी हो गया तो किसान को तीन से चार हजार का ही नुकसान होगा उसको किसान सहन कर सकता है।

THE PAHADI AGRICULTRE
THE MOUNTAIN AGRICULTURE MAGAZINE

समस्याएं

दीपक जी कहते हैं कि शुरू में बहुत समस्याएं आई लोगों को यह जानकारी नहीं थी कि बकरियों को दवाई भी दी जाती है, बकरियां बीमार भी होती हैं और क्षेत्र में बकरी पालन बहुत पहले से ही होती आ रही है लोग पहले भी पालते थे। लेकिन लोगों तब इतनी जानकारी नहीं होती थी। पर जब से इस प्रोजेक्ट के तहत कार्य हो रहा है तो लोग धीरे-धीरे इन चीजों को समझ रहे हैं जागरुक हो रहे हैं।

इसके अतिरिक्त हमारे लिए मुख्य चुनौतियाँ लोगों को समझाना था। **क्योंकि पहाड़ के लोग जल्दी से समझते नहीं हैं अर्थात किसी नए कार्य को करने से पूर्व बहुत जांच पड़ताल करते हैं जो सही भी है**, तो उन्हें समझा के उन लोगों को ट्रेनिंग दी इस चीज के बारे में बताया

तो शुरु-शुरु में थोड़ी बहुत समस्या रही लेकिन अब जैसे-जैसे किसान को इस चीज से लाभ मिल रहा है तो वह इसमें अपनी रुचि दिखा रहे हैं।

और बकरियों के प्रजनन के लिए हम पशु विभाग से अच्छी नस्ल का बकरा लेते हैं और अच्छी नस्ल के बकरों की गर्दन ऊंची होनी चाहिए सीना चौड़ा होना चाहिए लंबे पैर वाला होना चाहिए जिससे जब क्रॉस हो तो अच्छे नस्ले ही मिले |

बकरी पालन के क्षेत्र में डिस्ट्रिक्ट बागेश्वर अभी नंबर वन पर है और आगे भी रहेगा और हमारा यही सहयोग रहेगा कि इसका और उत्पादन बढ़ाए, लोगों की समस्याएं सुने और किसानों को मार्केटिंग मुहैया करवाएँ। बागेश्वर अल्मोड़ा उत्तराखण्ड में तो सभी जगह है लेकिन इसके अलावा हमे बाहर राज्यों जैसे हिमाचल प्रदेश, मुंबई से भी मार्केटिंग मिल रही है। और इन सब से हमारा वार्षिक टन ओवर 12 लाख तक होता है।

आगे दीपक जी कहते है कि किसी भी अन्य फसल या मवेशी गतिविधि के समान, यदि आपके पास **"भूमि - समय - ऊर्जा,"** ये तीन चीजें उपलब्ध हैं तो आप बकरियों को अपने आंगन में पालने का आनंद उठा सकते हैं। चाहे आप दूध के लिए बकरियों को पालें, मांस के लिए या पालतू जानवरों के रूप में, बकरी पालन आपके लिए आनंद का प्रमुख स्रोत हो सकता है। बड़े पैमाने पर बकरी पालन करने पर यह बेहतरीन दुग्ध उत्पादन और आय भी प्रदान कर सकता है। शुरुआत का पहला वर्ष हमेशा परिचयात्मक होता है और कोई भी व्यक्ति आने वाले वर्षों के लिए आवश्यक शुरूआती कदम उठा सकता है साथ ही साथ ज्यादा बड़े निवेशों (समय और पैसे में) का अनुमान भी लगा सकता है।

यह बताने की जरुरत नहीं है कि इस कार्य के लिए प्रतिबद्धता व सर्वश्रेष्ठ कौशल की आवश्यकता होती है जिसकी आपको जरुरत होती है। बकरियों और कई अन्य मवेशियों को एक दिन से ज्यादा के लिए अकेला नहीं छोड़ा जा सकता है। इसलिए, मान लीजिये यदि आप सप्ताह के लिए कहीं जाने का विचार कर रहे हैं तो अपने मवेशियों का ध्यान रखने के लिए आपको एक भरोसे मंद व्यक्ति को देखभाल का जिम्मा सौंपना चाहिए। ***मवेशी पालन का अर्थ है वर्ष के 365 दिन मवेशियों का ध्यान रखना****, निरीक्षण करना, उन्हें खिलाना-पिलाना, साफ-सफाई करना और परेशानियों को दूर करना। इसके अलावा, विशेष रूप से दूध देने वाली बकरियों का दिन में दो बार दूध निकालना भी जरुरी होता है; नहीं तो उनके स्वास्थ्य को खतरा हो सकता है। एक औसत बकरी 10-13 वर्ष तक जीती है, लेकिन 1-1.5 वर्ष से लेकर 7-9 वर्ष तक बच्चे (और दूध) दे सकती है।*

Article written by: *Vipin Soni, Editor "The Pahadi Agriculture" e-Magazine*

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10079

बागवानी और कृषि के क्षेत्र में मिसाल बने जगमोहन राणा जी

जगमोहन राणा, गांव हिमरोल, पोस्ट ऑफिस कफनोल, ब्लॉक नौगांव, जिला उत्तरकाशी

बागवानी वास्तव में कला और विज्ञान का अद्भुत मिश्रण है। जिसमें फल, सब्जियां, मसाले फूल, औषधीय और सुगंधित फूलों की खेती की जाती है बागवानी के क्षेत्र में न केवल परिवेश का सौंदर्यीकरण शामिल है बल्कि पौधों का अध्ययन और उनका महत्व भी शामिल है।

आज हम ऐसे ही उद्यमी के बारे में बात करने वाले हैं जो बागवानी और कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। नाम जगमोहन सिंह राणा गांव हिमरोल ब्लॉक नौगांव उत्तरकाशी के रहने वाले हैं, जगमोहन जी एम. ए. और बी. एड. पास आउट हैं, अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद जगमोहन जी ने अपनी पुश्तैनी खेती-बाड़ी को संभालते हुए अपने पिताजी के साथ जुड़कर बागवानी और कृषि के क्षेत्र में एक नई मिसाल पेश की है और आज के समय यह खेतीबाड़ी से लाखों रुपए कमा रहे हैं| जगमोहन जी कहते हैं कि मैंने स्वरोजगार की राह पर कार्य करना शुरू किया जो मेरे लिए भी एक बहुत बड़ा लक्ष्य था। चूंकि मेरे पिताजी श्री भरत सिंह राणा पहले से ही विकट परिस्थितियों में हाईटेक खेती कर रहे थे तो मुझे ज्यादा दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ा और **मेरे पिताजी भी चाहते थे कि मैं अपना स्वरोजगार शुरु करूं पर मेरी दादी तथा मां चाहते थे कि मैं सरकारी नौकरी में ही जाऊं** क्योंकि उनको लगता था कि एक अच्छी जिंदगी जीने के लिए सरकारी नौकरी ही चाहिए और मेरे लिए यह निर्णय लेना मुश्किल हो गया था तथा अंत में मैंने स्वरोजगार को अपनाया और मुझे विश्वास था कि मैं एक दिन इसमें जरूर सफलता हासिल करूंगा।

मैंने पिताजी के साथ 2018 से काम करना शुरू कर दिया। अपनी चकबंदी वाली जमीन पर घेर भाड़ पाइपलाइन तथा सिंचाई हौज बनवाएं और सेब के बगीचे के साथ-साथ खुमानी,

पुलम,चुल्लू, नाशपाती, आड़ू, अंगूर आदि का बगीचा लगाया तथा इसके बाद लगा कि यह पौधे फसल जल्दी नहीं देते हैं। तो अल्ट्राहाडेनसीटी रूट स्टॉक तथा अल्ट्राहाडेनसीटी सीडलिंग के 1500 पौधे सेब के लगाए। जिसमें से रूटस्टॉक वाले 1 वर्ष में ही फसल देते हैं तथा सीडलिंग वाले 3 वर्ष में फसल देते हैं, इसके साथ ही हर्बल पर भी कार्य शुरू कर दिया। जिसमें तुलसी लेमनग्रास, तेजपत्ता, गुलाब, कैमाइल आदि के पौधे अपने बाग में लगाए जिससे हम एक हर्बल चाय तैयार करते हैं इसके अलावा मैंने जो सी ग्रेड के फल और सब्जियां होती है उनका प्रसंस्करण करके इससे बनने वाले प्रोडक्ट जैसे जूस, चटनी, अचार आदि तैयार किया जिसमें मुख्य रुप से बुरांश का जूस, खुमानी का जूस, सेब की चटनी, सेब का अचार, हर्बल चाय, चुल्लू का तेल आदि है, इसके अलावा पहाड़ों में उत्पादित होने वाले पहाड़ी प्रोडक्ट जैसे लाल चावल, मंडवे का आटा, दालें, तथा चटनी, अचार, हर्बल चाय आदि प्रोडक्ट यमुना वैली ब्रांड के नाम से बाजार में बेचते हैं।

आगे जगमोहन राणा जी कहते हैं। मेरा काम मशरूम उत्पादन का भी है इससे भी हम बहुत सारे प्रोडक्ट बना रहे हैं जैसे मशरूम का आचार, ड्राई मशरूम, मशरूम पाउडर, मशरूम की बढ़िया भी अपने यमुना वैली ब्रांड के साथ बाजार में बेचते हैं इन सभी कार्यों से मुझे सालाना आय लगभग 10 से 12 लाख तकरीबन हो जाती है और मेरे इस काम से आज

मैं खुश हूं। तथा इन कार्यों को सीखने के लिए आज दूर दूर से लोग आते हैं। जिनको मैं निशुल्क ट्रेनिंग भी देता हूं हमारे इस काम में 1500 से 2000 महिला पुरुष हमारे चैन से जुड़े हैं जिसमें कोई उत्पादन करता है तथा कोई संरक्षण करता है तो कोई पैकिंग तथा कोई मार्केटिंग आदि। जिससे अपने आप खुद ही एक संतुष्टि मिलती है कि मैं समाज में भी अपना योगदान दे पा रहा हूं। जिसके लिए मुझे कई सम्मान भी मिल चुके हैं।

फल प्रसंस्करण मैं उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय त्रिवेंद्र रावत जी द्वारा सेब के बनाए गए प्रोडक्ट चटनी अचार तथा सुख्ती जो कि सी ग्रेड फलों से तैयार किए जाते हैं। 2019 में इसके लिए सम्मानित किया तथा 2020 में ब्लॉक स्तरीय किसान श्री का अवार्ड तथा वर्ष 2021 में अंतरराष्ट्रीय एप्पल फेस्टिवल में माननीय सुबोध उनियाल जी के द्वारा हमारे यमुना वैली के बेस्ट प्रोडक्ट के लिए सम्मानित किया गया इसके अलावा सपोर्ट टू स्टेट एक्सटेंशन प्रोग्राम फॉर एक्सटेंशन रिफॉर्मर्स **आत्मा योजना** के अंतर्गत जनपद के विकासखंड में उद्यान व सब्जी के क्षेत्र में फसल वर्ष 2021 और 2022 के आधार पर वित्तीय वर्ष 2022 और 2023 हेतु **सर्वश्रेष्ठ कृषक** चयनित किया गया। जिसके लिए मुझे 25000 हजार रुपए के साथ **किसान भूषण** के सम्मान से सम्मानित किया गया और 12 मार्च 2023 में बागवानी के क्षेत्र में किए गए सराहनीय कार्य के लिए **भागीरथ सम्मान** से सम्मानित किया गया। इसके अलावा कई संस्थाओं विद्यालयों के द्वारा से मुझे मेरे कार्यों के लिए प्रसरित पत्रों द्वारा सम्मानित किया गया है |

सरस मेला 2018 में स्टॉल का निरीक्षण करती उत्तराखण्ड की महामहिम राज्यपाल बेबी रानी मौर्य जी

एप्पल फेस्टिवल 2018 श्री जगमोहन राणा को सम्मानित करते मा0 आशीष चौहान (जिलाधिकारी, उत्तरकाशी)

आगे जगमोहन राणा जी कहते हैं कि कोरोना काल में कुछ ऐसी अनुभव भी है। जिनसे वर्तमान तो खुशहाल हुआ ही भविष्य के लिए उम्मीदें भी जागी है लॉकडाउन के दौरान जब वाहनों की आवाजाही पूरी तरह ठप थी तब हमने वोकल और लोकल थीम पर पार्सल के माध्यम से स्थानीय उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने की मुहिम शुरू की नतीजा वर्तमान में 1 दर्जन से अधिक उत्पाद ऑनलाइन डिमांड पर पार्सल के जरिए विभिन्न राज्यों में पहुंच

रहे हैं राणा परिवार के उद्यम से जुड़कर कई महिलाओं को रोजगार मिल रहा है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वोकल फॉर लोकल अभियान को आगे बढ़ाते हुए किसान भरत सिंह राणा व उनके पुत्र जगमोहन सिंह राणा ने गांव में महिलाओं के तैयार किए उत्पादों को स्थानीय बाजार से लेकर ऑनलाइन बाजार में बेचना शुरू किया।

जगमोहन जी बताते हैं कि ठोलियूंका, कफ़नोल, दारसो, धारी, कलोगी, संगोली, व पालुका समेत क्षेत्र के 20 गांव में ग्रामीण से स्थानीय उत्पाद खरीद कर उन्हें पार्सल के जरिए देश के विभिन्न राज्यों में भेजा जाता है इन उत्पादों की उत्तराखंड समेत अन्य राज्यों में काफी डिमांड रहती है लेकिन लॉकडाउन के दौरान व्यवसायिक गतिविधियां ठप पड़ गई ऐसे में हमने उत्पादों को ऑनलाइन बेचने की योजना बनाई इसके लिए पुराने खरीदारों से संपर्क कर पार्सल के माध्यम से उत्पादों की बिक्री शुरू की गई।

भविष्य हेतु योजनाएँ :

आगे जगमोहन जी कहते हैं कि जब मैं इस कार्य में गया जब मेने अपने पिताजी के साथ इस कार्य को संभाला तो शुरू में थोड़ी बहुत समस्या आई क्योंकि अगर मैं कहीं और भी जाता तो समस्या वहां भी आनी थी और कुछ खेती-बाड़ी हमारी पुश्तैनी है जैसे एप्पल की खेती लेकिन अब हमने इसे नया कर दिया है इसका विस्तार कर दिया है पहले हमारे एप्पल के पर बॉक्स 1000रुपए मे बिकता था लेकिन आज के समय वही बॉक्स मार्केट में 3 से 4 हजार ₹ में बिकता है और हमने इसमें नई वैरायटी भी लगाई और हमने तो यह किया ही लेकिन हमारे साथ साथ क्षेत्र में बहुत सारे लोगों ने भी यह कार्य शुरू कर दिया है और अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है।

जगमोहन जी कहते है। मेरा युवाओं के लिए एक संदेश है कि कोई भी काम कठिन नहीं होता बस दृढ़ निश्चय होना चाहिए तो हर कार्य में सफलता मिलती है, मैं भी M.A. B.Ed होने के बावजूद कृषि के क्षेत्र में गया और सफलता प्राप्त की जो आप भी कर सकते हैं|

***Article written by**: Vipin Soni*

Editor "The Pahadi Agriculture" e-Magazine

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10080

फूलों की खेती से कमा रहे हैं लाखों

पूरन सिंह कन्याल, गांव अटखेत, ब्लॉक डीडीहाट, जिला पिथौरागढ़

फ्लोरीकल्चर / पुष्पोत्पादन या फूलों की खेती उद्यानिकी की एक शाखा है जो सुंदर फूल देने वाले पौधों की खेती के साथ सजावटी पौधों की खेती से सम्बन्धित है। फूल आदिकाल से ही अपने रंग-रूप और बनावट के कारण मनुष्य को अकर्षित करते रहे हैं। वर्तमान समय में फूलों की खेती एक उद्योग का रूप ले चुकी है। जो विश्व के अनेक देशों की आय का मुख्य स्रोत है। हिमालय की गोद में बसा उत्तराखण्ड प्रदेश प्रकृति द्वारा वर-प्रदत्त उन पर्वतीय राज्यों में से एक है जहाँ की जलवायु, फूलों की व्यावसायिक खेती व इसके प्रवर्धन के लिए सर्वदा उत्तम है। इसी कारण प्रदेश के किसान व बागवान फूलों की खेती में अधिक रुचि लेने लगे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कंदीय फूलों में ट्यूलिप के बाद लिलियम एक महत्वपूर्ण फूल है जिसकी काफी माँग है। इसका लुभावना आकार, विभिन्न प्रकार के रंग, अधिक समय तक तरो-ताजा रहने व आकर्षक बनावट के गुणों के कारण कर्तित फूल के लिए संसार के प्रमुख निर्यातक देशों में उगाया जाता है होलेंड के फूल लिलियम की डिमांड ट्यूलिप के बाद दुनिया में सर्वाधिक है। व्यावसायिक खेती के लिहाज से उत्तराखंड में भी इसे अपनाया जा रहा है। सजावट के लिए सर्वाधिक डिमांड वाला ये फूल लोगों को स्वरोजगार मुहैया करा रहा है। यही कारण है कि पिथौरागढ़ में गेंदे के फूल की खेती के बाद लिलियम की खेती शुरू हो गई है। इससे जहां रोजगार के लिए शहरों का रुख करने वाले नौवजवान आर्थिक रूप से आत्म निर्भर होंगे वहीं दूसरों के लिए प्रेरणा का श्रोत बनेंगे। लिलियम फूल

के बल्ब को हॉलैंड से मंगवाया जाता है भारत प्रतिवर्ष इसके 15-20 लाख बल्बों का हॉलैंड से आयात करता है।

यह अनुमान लगाया गया है कि दुनियाँ के कुल वार्षिक व्यापार में कंदीय फूलों का लगभग 12000 करोड़ का व्यापार है । पुष्प उत्पादन के लिए कंदीयफूलों की खेती विभिन्न जलवायु वाली परिस्थितियों में की जा सकती है, परंतु इनके बल्ब उत्पादन व प्रवर्धन के लिए निश्चित सर्दियों की अवधि के साथ ठण्डी जलवायु की आवश्यकता होती है जो केवल कुछ क्षेत्रो में उपलब्ध है। इस तरह की जलवायु केवल हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्र जैसे लहौल एवं स्पिति, किन्नौर, चम्बा, जम्मू-कश्मीर व उत्तराखण्ड में पायी जाती है जो बल्ब उत्पादन के लिए बहुत ही उपयुक्त है । **लिलियम का प्रवर्धन शल्क कंदिक, एरियल कंदों, शल्क को अलग करके, कंदों के विभाजन और ऊतक प्रवर्धन द्वारा की जाती है** ।

आज हम ऐसे ही उद्यमी की बात करने वाले हैं जो काफी समय से फ्लोरीकल्चर फूलों की खेती कर रहे हैं नाम पूरन सिंह कन्याल गांव अटखेत ब्लॉक डीडीहाट जिला पिथौरागढ़ के रहने वाले हैं। कन्याल जी कहते हैं कि मैं 2017 से ही फूलों की खेती कर रहा हूं हमारे क्षेत्र में **जलागम की एक परियोजना** आई थी जिसके अंतर्गत हमने फूलों की खेती करना शुरू किया जलागम ने शुरू में लिलियम की खेती करने को कहा था जो कि मैंने 1000 वर्ग फीट से शुरू किया था और यह पॉलीहाउस के अंतर्गत होता है और वर्तमान समय में फ्लोरीकल्चर के लिए दो पॉलीहाउस लगाए हुए हैं जो कि 2000 वर्ग फीट में खेती करता हूं और इन दो पॉलीहाउस में दो प्रकार की फूलों की प्रजाति की खेती कर रहा हूँ।

जिसमें लिलियम एशियाटिक और लिलियम ओरिएंटल है जलागम के द्वारा शुरू में इसका बीज फ्री में दिया गया तथा इनका बीच बल्ब के रूप में मिलता है और इसके बाद मैंने इसका बीज खुद पेमेंट से मंगवाया जोकि जलागम में ही एक बिचौलिया रखा हुआ है तो

वह बिचौलिया जलागम को बीज देता था और जब मैंने जलागम से दोबारा बीच मांगा तो उन्होंने मना कर दिया था कि आपको पहले भी मिल चुका है फिर मैंने जो जलागम का कांट्रेक्टर था तो मैंने उसी से ही बीज मंगवाया।

आगे कन्याल जी कहते हैं कि लिलियम एशियाटिक व लिलियम ओरिएंटल की मार्केटिंग के लिए इसे दिल्ली भेजना पड़ता है यह यहां नहीं बिकता है शुरू में जब इन दो प्रजातियों की खेती की थी तो जलागम वालों ने ही 1 साल तक इसकी मार्केटिंग करी उन्होंने इसे दिल्ली भिजवाया था जो जलागम का कांट्रेक्टर था वही बीज भी लाता था और वही फूलों को भी बेचता था और वर्तमान में हमने इसी कांट्रेक्टर से संपर्क किया है और इसी को ही हम अपनी फसल देते हैं।

एक पॉलीहाउस में 2000 बल्ब लगते हैं और 2 पॉलीहाउस में 4000 बल्ब लगाए हुए हैं और एक बल्ब में एक स्टिक आता है, जो लिलियम एशियाटिक होता है उसका मूल्य जो जलागम का कांट्रेक्टर है वो हमें एक स्टिक का ₹20 देता है और लिलियम ओरिएंटल का एक स्टिक का ₹40 देता है। और भाड़ा हम देते हैं यहां से और हम यह रोडवेज की बसों में दिल्ली तक भेजते हैं।

आगे कन्याल जी कहते है। की इसकी कुछ किस्मों में कंद आधार पट्टिका के घेरे में उत्पन्न होते हैं जो बाद में प्रतिस्थापन कंदों के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। प्रत्येक प्रजाति या संकर अपनी ही दर पर बल्ब का उत्पादन करते हैं जैसे बहुत छोटे बल्ब, कमजोर प्रजातियाँ या अल्प विकसित बल्ब सिर्फ नए बल्ब का ही उत्पादन कर सकते हैं।

और आगे कन्याल जी कहते हैं कि अगर पहाड़ी किसान इसे करें तो अधिक मुनाफा ले सकता है क्योंकि यह 70 से 72 दिन में तैयार हो जाती है और किसान अपने चार से पांच पॉलीहाउस लगाकर साल भर इससे अधिक मुनाफा ले सकता है और यह साल में 2 सीजन तक फसल देती है|

भविष्य हेतु योजना :

कन्याल जी का कहना है कि काम तो हम और बड़े पैमाने पर करना चाहते हैं लेकिन पेमेंट टाइम से नहीं हो पाती है हमारा फूल अगर दिल्ली गया तो हफ्ते या 10 दिन में पेमेंट हो जानी चाहिए थी लेकिन ऐसा नहीं है वह एक या दो महीने तक पेमेंट को रोक के रखता है, और यहां इंडियन एशियाटिक और लिलियम ओरिएंटल और रजनीगंधा की मार्केटिंग नहीं है तो हमें दिल्ली भिजवाना ही पड़ता है। और काम बढ़ाने में भी सर दर्द हो जाता है पैसे लगाओ और पेमेंट समय से नहीं होती है, और हम तो चाहते हैं कि हम इसे बड़े पैमाने पर करें और लोकल में मार्केटिंग भी नहीं है इसकी जब परिस्थिति ठीक रहेगी तो ही हम इसकी खेती को हम बड़े पैमाने पर करेंगे। इसके अलावा और फूलों की खेती तो निरंतर कर ही रहे हैं और इसे और बड़े पैमाने पर करेंगे।

THE PAHADI AGRICULTRE
THE MOUNTAIN AGRICULTURE MAGAZINE

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10081

जैविक उत्पाद समूह : महिला समूहों ने रचा एक नया इतिहास

कुसुम बाला, गांव बड़ासी (सौड़ा सरौली) ब्लॉक रायपुर, जिला देहरादून

मंजिल उन्हीं को मिलती है जिनके सपनो में जान होती है, पंख से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है...., खुशबू बनकर गुलों से उड़ा करते हैं, धुआं बनकर पर्वतों से उड़ा करते हैं, हमें क्या रोकें ये जमाने वाले, हम पैरों से नहीं हौसलों से उड़ा करते हैं। *घरेलू काम में व्यस्त रहने वाली महिलाएं चारदीवारी से निकल कर खुद का व्यवसाय और गांव और शहर में लगने वाले साप्ताहिक बाजारों का संचालन कर रही हैं। ये किसी ने सोचा भी नहीं होगा, लेकिन राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन योजना से जुड़कर आज उत्तराखंड की ग्रामीण महिलाओं ने स्वावलंबन की मिसाल पेश की है। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़कर नित्य नई सफलता की कहानी लिख रही हैं और इन महिलाओं के सपनों को पंख देने में लगे हैं, शुरुआती समय में इन गरीब महिलाओं ने समूह बनाकर काम सीखा एवं छोटी-छोटी बचत करना शुरू किया। आपस में आवश्यकतानुसार लेन देन शुरू किया और अब स्वयं का बिजनेस खड़ा कर हर माह हजारों रुपए कमाने लगी हैं।*

आज हम ऐसे ही महिला की बात करने वाले हैं जिनका नाम कुसुम बाला गांव बड़ासी सौडा सरोली ब्लॉक रायपुर जिला देहरादून की रहने वाली है 2017 में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अन्तर्गत समूह से जुड़ कर पहाड़ी शुद्ध जैविक उत्पादों को देश के हर कोने तक पहुंचा रही हैं, कुसुम जी कहते हैं कि 2016 में हमारे समूह बने थे और 2017 में हमने यह पहाड़ी उत्पाद का कार्य शुरू किया। सबसे पहले हमने शुरुआत हरी सब्जी से की थी और इस के लिए हमें शुरू में प्लेटफार्म **सरस मेला परेड ग्राउंड देहरादून** से मिला था। जहां हमने सबसे पहले राई बेची थी।

उसके बाद हमने खादी ग्राम उद्योग से धूप बत्ती की ट्रेनिंग भी ली थी। तो उससे भी हमें काफी सपोर्ट मिला और धूप बत्ती का काम भी हमने इसी के साथ-साथ किया, लेकिन धूप बत्ती के काम में मुझे प्रॉफिट कम लगा तो हमने वो बन्द कर दिया और हम 10 से 12 महिलाओं ने एक हफ्ते की ट्रेनिंग ले रखी थी फिर अगरबत्ती का काम शुरू किया था लेकिन नहीं चला तो हमने उसे भी बन्द कर दिया । उसके बाद हम सभी महिलाओं ने अपने सप्लाई के कार्य में ज्यादा ध्यान दिया क्योंकि हमने खुद की चक्की ले ली थी। जैसे हम पहाड़ों से हल्दी साबुत ही लाते है और फिर उसे हम खुद अपनी चक्की में पिसते हैं, उसमें किसी प्रकार की कोई मिलावट नहीं होती है जो भी ऐसी मसाले वाली फसलें होती हैं उन्हें हम खुद ही अपनी चक्की में पिसते हैं फिर आगे सप्लाई करते हैं।

आगे कुसुम जी बताती हैं कि मेरे जितने भी प्रोडक्ट होते हैं वह सभी ऑर्गेनिक प्रोडक्ट ही होते हैं जैसे पहाड़ों के दूरदराज क्षेत्रों से मैं ऑर्गेनिक हल्दी लाती हूँ, इसके अलावा हम खुद भी खेती कर रहे हैं जो कि ऑर्गेनिक विधि से ही कर रहे हैं, जिसमें हम जितने प्रोडक्ट की भी सप्लाई करते हैं उसे जैविक उत्पाद से ही विक्रय करते हैं, हम पहाड़ी क्षेत्रों में जितने भी हमारे समूह बने हैं उनकी मदद से पहाड़ी क्षेत्रों में भी जैविक उत्पाद को इकट्ठा करके सप्लाई करती हूँ, और हमारी ग्राम पंचायत में अभी कम से कम 30 समूह कार्य कर रहे हैं, एवं हमारे रायपुर ब्लॉक में वर्तमान समय में कम से कम 700 समूह हैं|

आगे कुसुम जी कहती हैं कि जब हमारा समूह बना तो हमने लोगों को ट्रेनिंग दी जैसे ब्लॉक स्तर पर एवं अन्य जिलों में भी इसके कारण आज पूरे उत्तराखंड में हमारे ग्रुप बने हुए हैं, हम जहां भी जाते हैं कुछ ना कुछ सीखने को ही मिलता है, फिर यहां आकर लोगों को ट्रेनिंग भी देते हैं लोगों को इस बारे में समझाते भी हैं, आजकल गर्मियों में हमारा ऑफ सीजन है इस समय हम कहीं नहीं जाते हैं तो ऑफ सीजन में हम सिलाई का काम भी करते हैं और वैसे मैं ऑफ सीजन में सामान स्टॉक करके रखती हूँ और डिमांड जैसे

आती है तो थोड़ा-थोड़ा करके सामान ऑफ सीजन में भी सप्लाई करती रहती हूँ, इस समय मेरे पास **भंगजीरा, काला जीरा, तोर की दाल** है जिसे मैं सप्लाई करती रहती हूँ और इस समय ऑफ सीजन में जो स्टॉक रखा हुआ था खत्म हो गया है थोड़ा बहुत ही बचा हुआ है, लेकिन नवंबर-दिसंबर में 5 से 6 लाख का सामान स्टॉक करके रखना है एक सीजन में बाहर से सामान लाकर उसमें प्रॉफिट होता है तब जाकर पता चलता है कि अंत में कितना शुद्ध लाभ हुआ है।

ऑर्गेनिक प्रोडक्ट में **मंडवे की चाय, मंडवे के बिस्कुट** इस सभी उत्पादों की हम ट्रेनिंग देते हैं, हम कई प्रकार की बड़ियाँ भी बनाते हैं जैसे खीरे की, मूंग की दाल की, उड़द के दाल की, इसके साथ साथ हम महिलाओं से अनेक प्रकार का अचार भी बनवाते हैं, जो महिलाएं बाहर नहीं जा सकती तो उनको घर में ही रोजगार दो जिसे वह घर में ही कर सकती हैं| **इनका कहना है कि पहाड़ों में पलायन तभी रुकेगा जब एक दूसरे से जुड़ेंगे**, एक के जुड़ने से कुछ नहीं होगा, *आगे कुसुम जी कहती हैं कि मैं पूरे उत्तराखंड में घूमी हूँ, जहां आय का स्रोत कुछ नहीं है लेकिन जमीने बहुत अच्छी हैं फिर भी लोग खेती नहीं करते हैं, वहां से पलायन कर रहे हैं।*

भविष्य हेतु योजनाएँ :

इसी काम को मैं आगे और बड़े पैमाने पर करूंगी और अपने साथ और महिलाओं को जोड़ूँगी, जो महिलाएं घर से बाहर नहीं जाती हैं और काम करना चाहती हैं तो उन्हें रोजगार भी मिल जाएगा | मेरा इंटरेस्ट बिजनेस करने में ही है जिसे हमने शुरू में सब्जी से शुरू किया था आज के समय हम अपनी दुकान खोल के प्रोडक्ट बेच रहे हैं तो **धीरे-धीरे करके बढ़ेगा ही घटेगा नहीं अभी,** हमने छोटी चक्की लगाई हुई है अब भविष्य में और बड़ी चक्की लगाने की योजना बनायी है जिसमें धान की चक्की, झंगोरा पीसने की चक्की लगानी है| अभी छोटे-छोटे उद्योग लगा रखे हैं भविष्य में सोचा है कि हम बड़े उद्योग लगाएं अभी जहां हमने मसाले और दाल पीसने की चक्की लगाई हुई है वहां थोड़ी जगह की कमी है तो वहां भी और जगह बनाने की सोची है जहां और चक्कियां आ सके।

भविष्य में काले गेहूं की खेती के बारे में भी सोचा है लेकिन इसके लिए मिट्टी देखनी पड़ती है कि यहां होगा कि नहीं तो **मैं यही सब चीजों में रिसर्च करती रहती हूँ** कि हमारे क्षेत्र में कौन सी चीज होगी कौन सी नहीं, और मैं कृषि से भी जुड़ी हुई हूँ मुझे आगे इसी में ही काम करना है।

और अपने **जैविक उत्पादों को लेकर अब मैं ऑनलाइन भी अपने प्रोडक्ट की सप्लाई करूंगी,** शुरू में हमें अपने प्रोडक्ट को सप्लाई करने में दिक्कत आई लेकिन आज के समय में हमारे पास बहुत अच्छे प्लेटफार्म हैं जिनके माध्यम से हम अपने प्रोडक्ट सेल करते हैं और अब नॉलेज भी हो गई है इस चीज की ज्यादातर लोगों की डिमांड ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की है, तो इसमें भी हम धीरे-धीरे काम कर रहे हैं और बहुत जल्द हम अपने प्रोडक्ट को ऑनलाइन के माध्यम से भी बेचेंगे जैसे हमें **ऐमेज़ॉन** के लिए बोला गया है कि अमेजॉन में अपने प्रोडक्ट को डालो और बहुत प्लेटफार्म जिसके लिए हमें बोला गया है तो इसकी भी हम आगे शुरुआत करेंगे।

समस्याएं :

कुसुम जी कहती है की जैविक उत्पाद को खेत से खाने की मेज तक पहुँचाने तक में कई प्रक्रियाओं (अन्न को जमा करना, कटाई के बाद का प्रंबधन, अनाज की सफाई व पैकेजिंग, विपणन आदि) से गुजरना होता है। हर प्रक्रिया में उत्पाद की गुणवत्ता व उसे पूरी तरह जैविक बनाए रखना उत्पादक व पुरे समूह की जिम्मेदारी के साथ-साथ एक बड़ी चुनौती भी होती है।

जब हमने व्यवसाय शुरू किया था तो शुरू में हमें बहुत समस्याएं आई थी। **सबसे पहले अपने पास पैसे होना बहुत जरूरी है** और शुरू में हमे मार्केटिंग की बहुत समस्या हुई, और अपने पास इतने पैसे भी नहीं थे क्योंकि प्रोडक्ट खरीदने होते है स्टॉक अपने पास रखना होता है जिससे हम सीजन में प्रोडक्ट को बेच सके। लेकिन हम अपना काम करते रहे। फिर हमारे **समूह को कॉपपरेटिव बैंक सोसायटी से 5 लाख का लोन मिला** जो हमें बिना व्याज का मिला था। जब उन्होंने हमारा काम देखा तो ब्लॉक से हमे बोला की आप बिना ब्याज के लोन ले लो फिर हमने लोन लिया जिससे हमे बहुत मदद मिली। और हमने 3 साल के अंदर ही वो लोन वापिस कर दिया था, और जैसे हमने समय से पहले लोन वापिस कर दिया था तो फिर हम वापस दुबारा से लोन के लिए अप्लाई कर देते थे। तो इस तरीके से हमारी पैसों की समस्या दूर हुई और जो थोड़ा बहूत हमारा प्रॉफिट हो रहा था उन पैसों को भी हम इस काम में लगा रहे थे। तो इस तरीके से हमारा काम चल रहा था |

Written by: *Vipin Soni, Editor "The Pahadi Agriculture e-Magazine"*

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine **ISSN: 2583-7869**

Volume-1, Issue-4 **Article ID: 10082**

Providing sustainable livelihoods to farmers in Meghalaya

Meenakshi Bhardwaj, founder Aranyam Naturals

By providing sustainable livelihoods to farmers in Meghalaya, Aranyam Naturals has empowered the community, created a positive impact on their lives, and brought their products to the world.

Aranyam Naturals, a social startup based in Delhi is committed to supporting the tribal farmers, mostly women since its establishment. “A chance encounter with a social worker during a CSR summit and a promise I made to her to help the women farmers of her village inspired me to start Aranyam Naturals,” says Meenakshi Bhardwaj, Founder and CEO of Aranyam Naturals.

Vision: Aranyam Naturals was founded on a simple yet profound idea of ensuring that we source sustainably and provide a livelihood to those that we are sourcing from, while promoting wellness in society with products that are healthy and sustainable.

Mission: Exploring and learning all that nature and healthy living have to offer.

The journey began in 2015 when Meenakshi attended a CSR conference in Shillong. Her visit seemed ordinary at first, took an unexpected turn when she met a social worker, received a jar of forest honey and Lakadong turmeric from her and who sought help for her village. With no idea how to help them but a promise made to do so, Meenakshi returned to Delhi and to her work. Not knowing much about turmeric or what to do with it, Meenakshi finally decided to get it lab-tested. The lab test yielded a beautiful discovery about the curcumin levels in the turmeric, which ranged from 7 to 10 per cent. After testing the local turmeric and discovering that its curcumin level was only at 2 to 3 per cent, Meenakshi realised that what she had in her hands was extremely valuable. She knew that the farmers needed help, and she believed that the Lakadong turmeric was something that the world needed to know about and benefit from.

This single request led to the birth of Aranyam Naturals, which has become a beacon of hope for the farmers of the region. Aranyam directly collaborates with women farmers, offering them a platform to showcase their products and ensuring fair prices for their produce. Their region-

specific Lakadong turmeric is renowned for its high curcumin content, which is cultivated on the small plots of land they own. The turmeric is sun dried and then ground into a powder using a small machine. The honey is collected from the forests of Cherrapunji and Mawsynram.

Aranyam Naturals has had a profound impact on the lives of marginalised tribal farmers in Meghalaya of especially Laskein village. These farmers have long practiced traditional farming methods but faced challenges in accessing markets and earning sustainable incomes. Where the farmers lack the knowledge or accessibility, the social worker fills in the gaps and educates them, while also helping them navigate the language barrier. Aranyam Naturals stepped in to provide a reliable source of income enabling them to maintain their traditional way of life. By providing a fair price and market for the farmers, Aranyam Naturals has empowered the marginalised communities and created a positive impact on their lives.

Aranyam Naturals' determination to justly compensate the farmers has not wavered over the years, even when the market costs for the products inflate. Meenakshi Bhardwaj recognized the disproportionate impact of the pandemic on rural and marginalised communities and made it her mission to ensure that the farmers' livelihoods were protected. She went above and beyond to arrange for transportation during the lockdowns, when movement was heavily restricted. This not only ensured that the farmers could continue to sell their products but also helped them avoid the economic hardship that many others were facing during the pandemic.

Aranyam Naturals is an example of how a small effort can bring about a significant change in the lives of marginalised farmers. By providing sustainable livelihoods to farmers in Meghalaya, Aranyam Naturals has empowered the community, created a positive impact on their lives, and brought their products to the world. Meenakshi Bhardwaj's vision and determination have played a crucial role in making this possible, and her commitment to the cause has been unwavering despite the challenges faced.

Aranyam Natural is gradually becoming an emerging brand in the realm of natural organic products. Success cannot be achieved overnight, it requires patience, dedication, discipline, and

an iron will to never give up. There is no right definition for successful business, all you have to do is provide great quality and you will find the right audience to cater. And that small community that believes in you and your business, will be your definition of a successful business.

Everything related to the startup has been a learning process with a steep learning curve. Each step of starting the business was a challenge and required a lot of time and effort but slowly we managed to get better. Aranyam Naturals is an inspiring story of how social entrepreneurship can create a meaningful difference in the society.

Please visit www.aranyam.co.in for detailed information on the products.

THE PAHADI AGRICULTRE
THE MOUNTAIN AGRICULTURE MAGAZINE

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10083

जड़ी-बूटी की खेती से कमा रहे हैं लाखों

रोशनी चंदेल गांव, नया गांव पैलियु (भूड़पुर), ब्लॉक सहसपुर, जिला देहरादून

आमतौर पर भारत के किसान अनाज, फल, फूल और सब्जियों की खेती करना पसंद करते हैं, जाहिर है कि इन फसलों की मांग सालभर बनी रहती है और बाजार में इनके वाजिब दाम भी मिल जाता है| कोरोना महामारी के दौर से ही बाजार में हर्बल उत्पादों की मांग बढ़ने लगी है, जिसके चलते हर्बल और औषधीय पौधों की खेती भी अच्छा विकल्प है, किसान भाई औषधीय फसलों की खेती के लिये फसल विविधीकरण की प्रक्रिया भी अपना सकते हैं, जिससे खेतों में अलग-अलग तरह की फसलें भी उगाकर अतिरिक्त आमदनी मिल जाती है|

कृषि विशेषज्ञों की मानें तो खेतों से अच्छा उत्पादन हासिल करने के लिये किसानों को फसल विविधिकरण की विधि अपनानी चाहिये, क्योंकि एक ही फसल उगाने से धीरे-धीरे मिट्टी के जरूरी पोषक तत्व खत्म होने लगते हैं, लगातार एक ही प्रकार की फसल लेने मिट्टी की क्वालिटी और फसल की पैदावार भी प्रभावित होती है, औषधीय फसलों की खेती करने से मिट्टी की उर्वरा शक्ति तो बढ़ती ही है, साथ ही खेतों में अलग से उर्वरकों के इस्तेमाल की जरूरत नहीं पड़ती।

भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में औषधीय पौधों की भारी मांग बढ़ गई है. अश्वगंधा अमेरिका में तीसरा सबसे ज्यादा बिकने वाला उत्पाद बन गया है. ऐसे में औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार लगातार प्रयास करती नजर आ रही है|

औषधीय पौधों की खेती कर किसान ना सिर्फ अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार सकते हैं, बल्कि खाली और कम उपजाऊ जमीन का इस्तेमाल अपने आय को बढ़ाने में कर सकते हैं. दरअसल, औषधीय पौधों की खेती समान्य फसलों के अपेक्षाकृत कम उपजाऊ जमीन पर भी आसानी से की जा सकती है. ये पौधे मानव स्वास्थ्य तथा पर्यावरण संरक्षण के

लिए भी जरूरी हैं. औषधीय पौधों के हर भाग से दवाएं बनाई जाती हैं. वहीं, औषधीय पौधों में सर्पगंधा, तुलसी और नीम आदि प्रमुख हैं।

आज हम रोशनी चंदेल जी की बात करने वाले है क्योंकि यह भी काफी लंबे समय से जड़ी बूटी की खेती कर रहे है रोशनी चंदेल जी नया गांव पैलियू बूढ़पुर ब्लॉक सहसपुर जिला देहरादून की रहने वाली है। रोशनी जी कहती है की 2008 में यह डेंगू बुखार से पीड़ित हो गई थी। जिस कारण यह कोमा में भी चली गई थी जिसे उन्होंने कई जगह अपना इलाज करवाया लेकिन कही भी फायदा नहीं मिल पा रहा था लेकिन जब इन्होंने किसी वेद की जड़ी बूटियों वाली दवाई खाई तो इन काफी फायदा हुआ। जिसके बाद यह जड़ी बूटियों से काफी जुड गई थी। और उसके बाद इन्होंने 2012 से जड़ी बूटियों की खेती करना शुरू किया और यह फील्ड में भी जाते रहे और जड़ी बूटियों के ऊपर रिसर्च करते रहे इनका कहना था कि जड़ी बूटियों का मेरे ऊपर खुद प्रैक्टिकल हुआ था और आज के समय में हमने कहीं लोगों पर इन जड़ी बूटियों का प्रैक्टिकल किया है जिसका रिजल्ट बहुत अच्छा आया है और लोग इसे पसंद भी कर रहे हैं।

यह निम्न प्रकार की जड़ी बूटियों की खेती कर रहे है। जिनसे यह अच्छी मात्रा में मुनाफा ले रही है। जैसे स्टीविया,लेमन ग्रास,गिलोय,धतूरा,आखें,बंसका काला बांसा,करकरा,फोफली तथा अन्य प्रकार की जड़ी बूटियों की खेती कर रहे है और इसके अलावा फूलों की खेती और पेड़ पौधों की भी खेती कर रहे है।जिनका उपयोग जड़ी बूटियों में किया जाता है।

इसके अलावा यह जड़ी बूटियों का प्रोडक्ट भी बना रहे है जैसे हाल ही में उन्होंने शीशम और चीड़ का फिनायल बनाया था और मिर्गी के दौरे की दवा शुगर की दवा कैंसर की दवा बाल जड़ने की दवा पथरी की दवा तथा दाल चीनी इत्यादि।

देहरादून में हुए अन्न महोत्सव में इन्होंने स्टॉल लगाकर जड़ी बूटियों को प्रमोट भी किया था और मिलेट्स के इन्होंने प्रोडक्ट्स भी बनाए हुए थे, जैसे की जंगोरे के बिस्कुट और रागी मंडवा के प्रोडक्ट भी बनाए और उन्हे प्रमोट भी किया और काफी हद तक इनसे लोग भी जुड़े । रोशनी जी जड़ी बूटियों की खेती के अलावा मशरूम की खेती मोटे अनाज सब्जी उत्पादन और जैविक खाद का भी काम करती है।

जैविक खाद में यह केंचुए की खाद बनाती है तथा इन्होंने दो टैंक केंचुए की खाद के लिए बनाए हुए हैं जिससे यह अच्छा मुनाफा भी कमा रहे है और अपने खेतो में भी इसी जैविक खाद का उपयोग करती है।

अभी वर्तमान समय में इनका जड़ी बूटियों का उत्पादन 1 से 2 टन तक हो जाता है और लॉकडाउन से पहले इनका वार्षिक टर्नओवर 6 से 7 लाख रुपये जड़ी बूटियों के माध्यम से

होता था लेकिन रोशनी जी कहती है कि लॉकडाउन के समय इन सब की खेती छूट गई थी जिसके कारण अभी उत्पादन और परिस्थिति ठीक नहीं हो पाई है हम धीरे-धीरे इनमें सुधार कर रहे हैं और हम बहुत जल्दी ही जो वार्षिक टर्नओवर हमारा लॉकडाउन से पहले था वही या इससे अधिक टर्न ओवर हासिल कर लेंगे। जिसके लिए हम निरंतर प्रयास कर रहे है। इसके अलावा यह सब्जी उत्पादन भी करती है। और सब्जी उत्पादन से भी अच्छा मुनाफा ले रही है।

आगे रोशनी जी कहती है की कोरोना महामारी के समय से ही आयुर्वेद के साथ-साथ जड़ी-बूटी और औषधीय पौधों की बाजार में मांग बढ़ गई है, अगर बात करें प्रमुख औषधीय फसलों की तो इसमें नीम, आवंला, तुसली और चंदन का इस्तेमाल अच्छी मात्रा में किया जाता है, अगर किसान कम समय में अच्छी कमाई करना चाहते हैं तो इसबगोल, तुसली, एलोवेरा, हल्दी और अदरक की फसल जरूर लगायें, क्योंकि इन फसलों की मांग बाजार में सालभर बनी रहती है|

आयुर्वेद में औषधीय फसलों से फल, फूल, जड़, छाल और पत्तियों के रूप में जड़ी बूटियां निकलती हैं, जड़ी-बूटियां शरीर में बीमारियों तो खत्म करती ही हैं, साथ में इसके सेवन से शरीर की इम्यून पावर भी बढ़ती है, औषधीय पौधों की खेती करने से बाजार में इन जड़ी-बूटियों के अच्छे दाम मिल जाते हैं, लोग भी अंग्रेजी दवाओं की जगह कई बीमारी में जड़ी-बूटियों का सेवन कर रहे हैं, कई कपंनियां अब कैमिकलयुक्त दवाईयों को छोड़कर हर्बल प्रॉडक्ट्स बना रही है, यही कारण है कि जड़ी-बूटी और हर्बल पौधों की अच्छी कीमत मिल जाती है।

आगे रोशनी जी कहती है। की अन्य फसलों की तुलना में औषधीय खेती में लागत कम है। औषधीय खेती में प्राकृतिक आपदाओं से नुकसान का खतरा कम होता है। नीलगाय इन फसलों को नुकसान नहीं पहुंचाती है अधिकतर फसलों को जंगली जानवरों से नुकसान होता है किंतु जड़ी बूटियों की खेती में ऐसा नहीं है। जड़ी-बूटियों की खेती किसानों के लिए आय का एक बड़ा जरिया बन सकती है अगर इसकी जानकारी हो और इसे सही तरीके से करे तो अच्छा मुनाफा ले सकते है। औषधीय खेती को बढ़ावा देने से भारत देश दवाओं की उपलब्धता के मामले में भी आत्मनिर्भर होगा।

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10084

जड़ी-बूटी की खेती के साथ कर रहे हैं मशरूम उत्पादन

रोशनी चंदेल गांव, नया गांव पैलियु (भूड़पुर), ब्लॉक सहसपुर, जिला देहरादून

मशरूम की खेती के बारे में तो आपने सुना होगा, लेकिन गैनोडर्मा मशरूम की खेती के बारे में बहुत ही कम लोग जानते होंगे| गैनोडर्मा मशरूम को ऋषि मशरूम के नाम से भी जाना जाता है| वर्षा ऋतु के मौसम में यह सख्त, सूखे व जीवित वृक्षों की जड़ के पास उग आती है| यह मशरूम देखने में गहरा लाल, स्लेटी, भूरे रंग का और चमकदार होता है| प्रकृति में गैनोडर्मा मशरूम की कई किस्में मौजूद है| गैनोडर्मा का ताजा मशरूम गूदेदार और सूखने पर सख्त व कड़क हो जाता है| गैनोडर्मा मशरूम में कई औषधीय गुण होते है, जिस वजह से यह कमजोरी को दूर करने में सहायक है| इसके अलावा यह एलर्जी, उच्च रक्त चाप जैसी समस्या से भी निजात दिलाता है| औषधीय गुण से भरपूर होने के कारण बाजार में गैनोडर्मा मशरूम की काफी मांग रहती है|

रोशनी जी कहती है। की 2016 में एफआरआई देहरादून में इन्होंने गेनोडर्मा मशरूम की 3माह की ट्रैनिंग ली थी। जिसके बाद नाबार्ड के द्वारा एफपीओ लैब इन्हे दिया गया जिसके बाद इन्होंने गेनोडर्मा मशरूम की खेती करना शुरू किया जिससे इन्होंने अधिक मात्रा में मुनाफा प्राप्त किया। रोशनी जी कहती है कि जड़ी बूटियों के बाद 2016 में हमने गैनोडर्मा मशरूम की खेती करना शुरू किया जो कि नाबार्ड के द्वारा एफपीओ लैब में हमने इसकी खेती शुरू की जिसका वार्षिक टर्नओवर 2 करोड़ करीब हुआ था लेकिन लॉकडाउन के समय इसकी खेती भी हमसे छूट गई थी और बिना लैब के या बिना उचित साधन के इसकी खेती करना असंभव है और मार्केट में गैनोडर्मा की कीमत अच्छी खासी है और यह एक औषधि के रूप में भी इसका उपयोग किया जाता है|

गैनोडर्मा मशरूम से हृदय रोग, किडनी व कैंसर के साथ ही करीब 12 से 15 बीमारियों से राहत मिलेगी। इसमें पोलिक एसिड होता है। जो खून की कमी को दूर करता है। मधुमेह

की बीमारी व गठिया रोग को दूर करता है। ब्लड प्रेशर व कोलेस्ट्रॉल को भी कम करता है। लॉकडाउन से पहले हमने इसकी खेती अच्छे पैमाने पर की थी और हम गैनोडर्मा मशरूम से अच्छा मुनाफा ले रहे थे।

लेकिन कोरोना जैसी महामारी के कारण हमसे यह खेती छूट गई और वर्तमान समय में हम ओयस्टर मशरूम और बटन मशरूम की खेती कर रहे हैं जिनकी मार्केट में अच्छी मांग है और लोग इन्हें पसंद भी करते हैं इसके लिए हमने तीन रूम लगाए हुए हैं। जिसके लिए इन्होंने शुरु में 15 हजार की लागत लगाई थी। और इस समय यह इन से अच्छा मुनाफा ले रही है। और इसी के साथ यह मशरूम से प्रोडक्ट भी बना रहे हैं जिनकी मार्केट में अच्छी खासी मांग है।और लोग इन प्रोडक्ट को काफी पसंद भी कर रहे है।

इसके अलावा यह मिर्गी में उपयोग होने वाली मशरूम जिन्हे गुच्छी कहते है उसकी भी खेती कर रहे है। जो की एचपी हिमाचल के चम्बा में कर रहे है। और यह मशरूम से कई प्रकार के प्रोडक्ट बना रहे है। जैसे मशरूम की बड़ी, ड्राई मशरूम, पाउडर, नमकीन, बिस्कुट, पापड़, जैम, सूप आदि प्रोडक्ट बना रहे है।

इसके अलावा रोशनी जी कई संस्था से भी जुड़ी हुई है। तथा कृषि मेलो एवं प्रदर्शनी में भाग लेती रहती है और यह निरंतर फील्ड में काम करती है जिससे जड़ी बूटियां मशरूम की खेती के लिए व सब्जी उत्पादन के लिए यह अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकें तथा अपनी खेती को करने के लिए यह नई चीजें को अपनाएं जिससे अधिक से अधिक मात्रा में उत्पादन हो तथा रोशनी जी कई लोगों को मशरूम और जड़ी बूटियों के बारे में बताते भी है कई लोगों को रोजगार भी दे रहे है।

भविष्य हेतु योजनाएँ:

रोशनी जी कहती हैं कि लॉकडाउन में जो खेती-बाड़ी हमसे छूट गई थी उसे पुनः उसी पैमाने पर शुरू करना है और जड़ी बूटियों को अधिक मात्रा में इसकी खेती का विस्तार करना है तथा जड़ी बूटियों के बने प्रोडक्ट में भी बढ़ोतरी करनी है और लॉकडाउन के समय जितना भी नुकसान हुआ है भविष्य में उस नुकसान की भरपाई हम कर रहे हैं जिसके लिए हम निरंतर प्रयास कर रहे हैं और आगे भी ऐसे ही करते रहेंगे और मशरूम के लिए अभी हम ओयस्टर मशरूम और बटन मशरूम की खेती कर रहे है इसके अलावा अन्य प्रकार के मशरूम की खेती भी करेंगे जिसमे अभी रिसर्च हो रहा है और इन से बने प्रोडक्ट को बड़े पैमाने पर करेंगे। साथ ही साथ ही मिलेट्स के प्रोडक्ट में भी कार्य किया जायेगा अभी हम मिलेट्स के प्रोडक्ट में कुछ मात्रा में ही प्रोडक्ट बना पाए हैं लेकिन आने वाले समय में हम मिलेट्स के प्रोडक्ट में भी बढ़ोतरी करेंगे साथ ही सब्जी उत्पादन मैं भी हमारा निरंतर कार्य चल रहा है हम हर सीजन की सब्जी उगाते हैं जिससे हमें अच्छा मुनाफा प्राप्त होता है भविष्य में सब्जी की भी अन्य प्रजाति का उत्पादन करना है।

THE PAHADI AGRICULTRE
THE MOUNTAIN AGRICULTURE MAGAZINE

THE PAHADI AGRICULTRE
THE MOUNTAIN AGRICULTURE MAGAZINE

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10085

सेब की खेती को बनाया आजीविका का साधन

विरेन्दर सिंह, गांव- बागी, ब्लॉक- चकराता, जिला- देहरादून

सभी फलों में सेब को एक अत्यंत स्वस्थ्य वर्धक फल के रूप में जाना जाता है यदि आप रोज एक सेब का सेवन करते हो तो आप अनेक प्रकार की बीमारियों से छुटकारा पा सकते हैं| सेब को वैज्ञानिक भाषा में मेलस डॉमेस्टिका कहा जाता है यह मुख्य रूप से मध्य एशिया में उगाए जाते हैं किंतु इन्हें अब यूरोप में भी उगाया जाता है, भारत देश में सेब को सबसे ज्यादा हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर में उगाया जाता है किंतु वर्तमान समय में सेब की कई ऐसी किस्मों को तैयार किया गया है जिन्हें अब पर्वतीय क्षेत्र और मैदानी क्षेत्रों दोनों में उगाया जाता है, इसके साथ-साथ उत्तराखंड के कई पर्वतीय क्षेत्रों में भी अब किसान सेब की खेती कर रहे हैं इतना ही नहीं सेब की खेती से उत्तराखंड के किसान भी लाखों रुपए का लाभ कमा रहे हैं|

उत्तराखंड के ऐसे ही प्रगतिशील किसान है विरेन्दर सिंह| विरेन्दर जी ग्राम बागी ब्लाक चकराता जिला देहरादून के रहने वाले किसान है यह बताते हैं कि यहां पिछले कुछ सात-आठ वर्षों से सेब की बागवानी करते आ रहे हैं इनका कहना है यह पूर्व से ही खेती-बाड़ी करते आ रहे हैं पहले इनका मोटे अनाज मंडवा, कोणी एवं धान, गेहूं की खेती करते थे पर इनके पिताजी का छोटी उम्र में ही देहांत होने के कारण इनके बड़े बेटे होने के कारण इनके सर पर जिम्मेदारियां बढ़ गई थी पिताजी के देहांत के बाद घर का खर्चा, भाई - बहन की पढ़ाई जैसी अनेक जिम्मेदारियों ने उनको घेर लिया था इनका कहना है पिताजी तो पारंपरिक खेती करते थे वह अपने खाने तक सीमित करते थे आजीविका के चलाने के लिए वह ध्याड़ी- मजदूरी का काम करते थे छोटी उम्र में पिताजी के देहांत के कारण वीरेंद्र जी की पढ़ाई भी छूट गई उसके बाद इन्होंने बहुत सोचा कि अब क्या किया जाए यह बताते हैं कि इनके गांव की जलवायु ठंडी है और इनके क्षेत्र में पहले से थोड़ा बहुत सेव भी होते थे तो इन्होंने सोचा क्यों ना आजीविका चलाने के लिए सेब के पौधे लगाए जाए तो इन्होंने

सेब के हजार पौधे लगाए, आज के समय में विरेन्दर जी के पास सेब के हजार पौधे लगाए हुए हैं इनका कहना है हजार पौधों में इनके पास सौ से डेढ सौ पेटी बन जाती है अगर मंडी का रेट अच्छा रहा तो इनको सेब की फसल में कम से कम तीन से चार लाख तक का मुनाफा हो जाता है विरेन्दर जी सेब की बागवानी के साथ-साथ राजमा, लहसुन, उडद, मिर्च, तिल इत्यादि की खेती भी करते हैं इसके साथ-साथ इनके पास पशुपालन भी रखे हुए हैं पशुपालन में इनके पास एक गाय और कुछ भेड- बकरियां भी रखे हुए है |

मुख्य चुनौतियां- विरेन्दर जी का कहना है सेब की खेती के लिए बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है यह बताते हैं सबसे बड़ी समस्या इनके पास जलवायु परिवर्तन जैसे कि तापमान में वृद्धि, अनियमित बर्फबारी, असामान्य वर्षा के कारण पानी की कमी, ओलावृष्टि आदि जैसी कठिनाइयों से जूझना पड़ता है इसके अलावा फसल में अनेक प्रकार के रोग जैसे कीट रोग, पपड़ी रोग, पाउडरी मिल्डयू, रूट बोरर लग जाते हैं जिसके कारण भी पौधों को नुकसान हो जाता है इनका कहना है हालांकि यह रोगों से बचाव के लिए यह कीटनाशक का छिड़काव करते हैं पर फिर भी कई पौधे क्षतिग्रस्त हो जाते हैं|

भविष्य हेतु योजना- इनका कहना है भविष्य में यह अपने सेब की बागवानी को और भी बड़े स्तर पर ले जाना चाहेंगे, उनके पास अभी भी 5 से 10 नालियां बंजर पड़ी हुई है जिनमें वह सेब की रुटस्टॉक नाम की प्रजाति लगाना चाहिएंगे |

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10086

उतराखण्ड के 'पिस्यू लूण' (पहाड़ी नमक) मिल रही देश-भर में पहचान

संदीप पांडे, काकड़ीघाट, नैनीताल, उत्तराखण्ड़

*उत्तराखंड के अधिकतर जगहों पर पिसा नमक यानी **'पिस्यू लूण'** बहुत ही प्रसिद्ध है इस पिसे नमक का स्वाद बेहद खास होता है पिस्यू लूण कई तरह के फ्लेवर में उपलब्ध होता है इस नमक को रायते ,सलाद और फ्रूट चाट किसी में भी इस्तेमाल कर सकते हैं यहां तक कि आप अगर सब्जी बना रहे हैं तो सब्जी के मसालों में भी अगर मिला दिया जाए तो यह सब्जी को और भी स्वादिष्ट बना देता है पहाड़ों में अब पिस्यू लूण (पहाड़ी नमक) स्वरोजगार का एक साधन बन चुका है|*

उत्तराखंड में नैनीताल के ककड़ीघाट में तरह-तरह के उत्पाद का इस्तेमाल करके 55 प्रकार का नमक बनाया जाता है, काकडी घाट में पिस्यू लूण यानी पहाड़ी नमक की फैक्ट्री है जो कि पिस्यू लूण के नाम से जानी जाती है इस फैक्ट्री के तीन लोग मालिक हैं उन्हीं में से एक है संदीप पांडे जी, संदीप पांडे जी बताते हैं इन्होंने पहाड़ी नमक का व्यवसाय 2013 में शुरू किया था, उससे पहले यह दिल्ली में नौकरी करते थे तो पहाड़ी लोगों के घर तो पहाड़ी नमक पीसा ही जाता है तो यह भी अपने खाने के साथ पहाड़ी नमक लेकर जाते थे तो लोगों ने इनका नमक खाया तो उसके बारे में जानने की कोशिश करी तो वहीं से संदीप जी के दिमाग में आया क्यों ना अपने उत्तराखंड के पहाड़ी नमक को एक नाम दिया जाए इसको स्वरोजगार के तौर पर किया जाए तो उसके बाद इन्होंने अपने साथ दो महिलाएं रखी और पहाड़ी नमक बेचने का काम शुरू कर दिया, इनका कहना है जब इन्होंने पहाड़ी नमक का व्यवसाय शुरू किया तो उन्होंने पहले पांच प्रकार के नमक के साथ इसकी शुरुआत की पर पहले- पहले इनको पहाड़ी नमक बेचने में बहुत परेशानी आइ इनका कहना है जो बाहर के लोग थे उनको समझाने में काफी दिक्कत है आई पहाड़ी नमक होता क्या है इसका स्वाद इसके फायदे बताने में दिक्कत आई जो बाहर के लोग नमक लेने आते थे

उनको समझाना मुश्किल तो था ही पर जो पहाड़ के लोग थे वह नमक खरीदने से मना कर देते थे वह कहते थे यह तो हमारे अपने घरों में पिसा जाता है तो इसको खरीदने से क्या फायदा इनका कहना है पहले पहले इनका काफी सामान भी बर्बाद हो जाता था पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी धीरे-धीरे लोगों को समझाया अपनी मार्केटिंग बनाई और आज के समय में यह 55 फ्लेवर के नमक बनाते हैं|

इन्होंने अपने साथ 20 से 22 महिलाओं को रोजगार दिया हुआ है और कुछ अन्य युवाओं को भी इन्होंने रोजगार दिया हुआ है इनका कहना है इनके यहां महिलाएं 55 प्रकार के नमक को सिलबट्टे पर लहसुन, लाल मिर्च, भांग, काला जीरा जैसी अनगिनत चीजों को

पीसकर बनाए जाते हैं आज के समय में इनका यह नमक भारत में लगभग सभी जगह दिल्ली,मुंबई, देहरादून अनेक जगहों पर बिकता है|

भविष्य हेतु योजना- संदीप जी बताते हैं इनका एक नारा है "मातृशक्ति को सशक्त बनाना" जिसका मतलब है जो उत्तराखंड की कम पढ़ी लिखी महिलाएं हैं जो किसी कारणवश जिनको कहीं रोजगार नहीं मिल पाता वह उन महिलाओं को रोजगार देना चाहेंगे, और यह अपने नमक के कारोबार को उत्तराखंड के कई अन्य जगहों में भी खोलना चाहेंगे जिससे जो कम पढ़ी-लिखी महिलाएं हैं उनको भी रोजगार दिला सके|

Article written by:

Hema Ramola, Editor 'The Pahadi Agriculture e-Magazine'

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10087

उन्नति स्वायत सहकारिता

मदन उपाध्याय, गांव करेला, ब्लॉक डीडीहाट, जिला पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड़

भारत के ग्रामीण अंचलो में सहकारी आन्दोलन का शुभारम्भ करते हुए सहकारिता के माध्यम से आसान शर्तों पर कर्ज दिलाने की व्यवस्था की आधिकारिक रूप से शुरूआत वर्ष 1904 में सहकारी ऋण समिति अधिनियम बनने से हुई, जो सहकारिता की दिशा में पहला कदम था। इस अधिनियम के अन्तर्गत प्रारम्भ में केवल दो प्रकार शहरी क्षेत्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रों की समितियों का गठन किया गया। इस अधिनियम के पारित होते ही इसके प्राविधानों को उत्साह के साथ लागू करते हुए विभिन्न प्रान्तीय सरकारों द्वारा रजिस्ट्रार नियुक्त किये गये और सहकारिता के सम्बन्ध मे प्रभावी शैक्षिक कार्यक्रम चलाये गये, जिससे वर्षानुवर्ष सहकारी आन्दोलन में प्रगति स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होने लगी। इस अधिनियम में आगे चलकर कुछ कमियां भी दृष्टिगोचर हुई, जिन्हें दूर करते हुए तथा सहकारिता के कार्यक्षेत्र में वृद्धि लाते हुए वर्ष 1912 में नया सहकारी अधिनियम बनाया गया। इस अधिनियम में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में गठित की जाने वाली समिति के अन्तर को समाप्त कर दिया गया तथा सहकारिता आन्दोलन के प्रसार को समुचित संरक्षण मिल जाने से ऋण देने के अतिरिक्त अन्य उद्देश्यों के लिए भी सहकारी समितियों का गठन सम्भव हो सका। तत्पश्चात् सहकारी आन्दोलन के बहुमुखी प्रसार को दृष्टिगत रखते हुए वर्ष 1965 में नया सहकारी अधिनियम लागू किया गया। इस अधिनियम की धारा 130 के अन्तर्गत प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए राज्य सरकार द्वारा उ0प्र0 सहकारी समिति नियमावली 1968 अधिसूचित की गई। वर्तमान में इसी अधिनियम एवं नियमावली के अधीन समस्त सहकारी समितियां अपने कार्यों का निष्पादन कर रही हैं।

सहकारिता विभाग के संगठन का दृष्टिकोण न केवल कृषकों को सस्ते ऋण की सुविधा उपलब्ध करना है, वरन प्रदेश के विभिन्न अंचलो में ग्रामीण तथा शहरी जनता के निर्बल और निर्धन वर्ग को समृद्वशाली बनाते हुए उनके स्तर को ऊंचा उठाना है। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सहकारिता विभाग द्वारा विभिन्न योजनाओं जैसे क्रय-विक्रय, शीतगृह, श्रम, उपभोक्ता, सहकारी ऋण एवं अधिकोषण आदि कार्यान्वित कर सहकारी समितियों को

आर्थिक सहायता उपलब्ध करायी जा रही है यह विभाग समितियों के लिए एक मित्र, विचारक एवं पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करता है तथा उनके कार्यों में आवश्यक निर्देश देता है तथा पर्यवेक्षण करता है। सहकारी समितियां सस्ते ऋण की सुविधा उपलबध कराने एवं निर्बल वर्ग के लोगों को समितियों की अंशपूजी में विनियोजन हेतु ऋण देने के अतिरिक्त कृषकों द्वारा उत्पादित वस्तुओं के विधायन एवं संग्रहण में सहायता करती है और क्रय-विक्रय की व्यवस्था कर उत्पादकों को उनकी उपज का अच्छा मूल्य दिलाने में भी सहयोग प्रदान करती है। यह समितियां किसानों को कृषि कार्य के प्रयोग में आने वाले विभिन्न प्रकार के कृषि निवेशों को उन्हें उचित मूल्य पर उपलब्ध कराती हैं तथा ग्रामीण/नगरीय क्षेत्रों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत सहकारी समितियों के माध्यम से उपभोक्ताओं को कम मूल्य में दैनिक आवश्यकताओं की उपभोक्ता वस्तुओं के वितरण का कार्य भी किया जा रहा है।

आज ऐसे ही सहकारिता की बात करने वाले है जिसका नाम उन्नति स्वायत सहकारिता है जो की डीडीहाट पिथौरागड़ में स्थित है। मदन जी B. Ed. पास आउट है और यह पेशे से प्रोफेशनल फोटोग्राफर है मदन जी कहते हैं कि 2019 में हमारे क्षेत्र में ग्रामीण नाम से कुछ प्रोजेक्ट आया था जिसके तहत हमने सहकारिता का कार्य शुरू किया जिसमें हमने सबसे पहले डेयरी रिलेटेड प्रोडक्ट में काम शुरू किया उसके बाद कलर रोली होली का कलर फूड कलर से शुरू किया था और उन पर काम किया फिर उसके बाद बुरांश माल्टा नींबू आंवला के जूस में भी कार्य करने लगे और शुरू में हमने इन सभी से ही शुरू किया था।

आगे मदन जी कहते है की इसके वर्तमान में मेंबर 490 के आसपास टोटल सदस्य हैं और बोर्ड में 6 लोग होते हैं और बोर्ड में वह लोग होते हैं जो एक्टिवली काम करते हैं जिसमें पदाधिकारी काम करते हैं अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष, उप सचिव, उप कोषाध्यक्ष यह लोग होते हैं और सदस्य हमारे किसान हो गए जो वर्तमान में 490 के आसपास है जिनका अपना सदस्य शुल्क जमा होता है और साथ में एक शेयर शुल्क होता है जो शुरुआती पूंजी के लिए उनसे शेयर लेते हैं।

और पहाड़ी क्षेत्र के रॉ मैटेरियल जिसमें हम कार्य कर रहे हैं जिनका हम अभी जूस तैयार कर रहे हैं जैसे माल्टा आंवला बुरांश नींबू इन सभी को पहाड़ से अपने किसानों से लेते हैं तथा उन्हें अपने आउटलेट में लाते हैं।

और हमारी प्रोसेसिंग यूनिट गोचर में स्थित है वही सब एकत्रित करके वही मैं वहीं से आगे की प्रोसेसिंग शुरू करते हैं और सूजन के हिसाब से वहां लेबर लगा देते हैं जैसे माल्टा का सीजन है तो उसकी जुलाई के लिए और उसके दोस्त बनाने के लिए जो प्रोसेसिंग होती है सिर्फ के लिए एक या दो लड़के परमानेंट जो काम करते हैं वही इसको बनाते हैं और इसके अलावा हमारा मार्केट में आउटलेट है जहां हम पैकिंग वगैरह करके फिर मार्केट में भेज देते हैं।

हम किसानों से सीजन के हिसाब से फैसले लेते हैं जैसे हमारा अभी लीची में काम चल रहा है तो लीची के कुछ बगीचे हमने ले रखे हैं जो हम किसानों से लेते हैं और जो A क्वालिटी की लीची होती है उसे मार्केट में सेल करते हैं और जो B और C क्वालिटी की लीची होती है उसे हम जूस वगैरा बनाने में प्रयोग करते हैं उस के अलावा अभी आम और नाशपति में आगे काम चलेगा लेकिन अभी माल्टा और लीची में ज्यादा कार्य हो रहा है इसके अलावा आउटलेट में हमारा जो परमानेंट कार्य है वह डेरी प्रोडक्ट का है।

और जैसे अभी होली का सीजन आएगा तो उसके 2 या 3 महीने पहले ही हम रंगो में कार्य करते हैं जनवरी-फरवरी में पूरा इसी का ही काम रहता है इसमें हमने कोशिश की थी कि इसे प्योरली हर्बल बनाएं।

लेकिन क्या होता है कितने प्रकार के रंगों को नेचुरल भी करना थोडा मुश्किल रहता है फिर हमने जो खाने वाले फ्रूट कलर होते हैं तो वह हमने प्रयोग करें थे आरारोट जोकि पाउडर फॉर्म में होता है तो उसमें मिक्स करके फिर उसके अलग-अलग जैसे लाल कलर पीला कलर हरा कलर गुलाबी कलर जिसे गुलाल भी कहते हैं फिर उसमें हम कुछ एसेंस वगैरह का प्रयोग करते हैं जो उसमें सेंट का काम करता है।

आगे मदन जी कहते हैं कि किसानों का इसमें फायदा होता है जैसे अभी हमने लीची का पूरा बगीचा लिया हुआ है तो उनको यह दिक्कत नहीं है कि खुला बेचना है इतना यहां भेजो उतना वहां भेजो तो इकट्ठा हम ले लेते हैं और कोशिश करते हैं कि उनको एक अच्छा रेट दे पाए।

और अभी तक जो भी इसका प्रॉफिट होता है उसका अभी तक शेयर नहीं हुआ है क्योंकि लास्ट समय हमने फर्स्ट एजीएम की थी तो उस समय हम बहुत अच्छे प्रॉफिट में नहीं थे तो फिर सब का यह मानना था कि कुछ समय और कार्य करते हैं उसके बाद जो भी प्रॉफिट बनेगा तो फिर उसको शेयर करेंगे और धीरे-धीरे हम इस चीज में अच्छा कार्य कर रहे हैं और इस साल हम इन सब चीजों से अच्छा प्रॉफिट लेंगे और हम ने सबसे पहले यही कोशिश की है कि किसानों को उनकी फसल का सबसे पहले उचित दाम दे सके।

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10088

पुष्प उत्पादन, कीवी की खेती, डेरी एवं पहाड़ी उत्पादों का आउटलेट

मदन उपाध्याय, गांव करेला, ब्लॉक डीडीहाट, जिला पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड़

मदन जी कहते हैं कि हम फूलों में भी कार्य करते हैं जो कि हम 2020 से कर रहे हैं हम कट फ्लावर में ही कार्य करते हैं जैसे लिलियम ग्लेडियोलस और रजनीगंधा रजनीगंधा का ज्यादा रिस्पांस नहीं है लेकिन लिलियम मैं ज्यादा कार्य होता है जिसके लिए हमारे पास सिलेक्टिव किसान है जो कि लगभग 20 से 25 किसान है उन्ही से ही हम फूलों की खेती करवाते हैं जिसके लिए हम बीज पॉलीहाउस दवाइयां वगैरह के लिए हम उद्यान विभाग से भी सहयोग लेते हैं और शुरू में हमारे क्षेत्र में ग्रामीणों का प्रोजेक्ट था तो वह अपने स्तर पर हमें बीच उपलब्ध करवाना या पॉलीहाउस उपलब्ध करवाना तो यह सब कार्य वह प्रोजेक्ट के अंतर्गत हुआ था फिर फेडरेशन का कार्य होता था कि उनसे माल इकट्ठा करके उसको उसकी ग्रेडिंग करके और उसकी पैकिंग करके फिर उसको मार्केट तक पहुंचाना वह फेडरेशन का काम रहता था।

और इसकी मार्केटिंग दिल्ली में है तो हम इसे मार्केटिंग के लिए दिल्ली बिजवाते हैं। और यह सीजन पर डिपेंड करता है जैसे हमने किसानों से फसल ली उसके बाद मार्केट किया तो रेट वहां बिका उसके बाद हमारा गाड़ी भाड़ा पैकिंग लेबर जो भी कॉस्ट लगा उसको काट के उसके बाद जो भी प्रॉफिट बना वह उनको दे दिया जाता है।

कीवी कल्टीवेशन :

मदन जी कहते हैं कि कीवी कल्टीवेशन को हमें अभी डेढ़ साल हुआ है अभी इस पर फ्रूट नहीं आए हैं अभी कम से कम एक या डेढ़ साल और लगेगा और इसमें और हमने यहां 50 नाली में लगाए हुए हैं जिसमें कि हमने 400 पौधे लगाए थे जिसमें से कि 100 पौधे खराब हो गए हैं आगे मदन जी कहते हैं कि इसकी खेती के लिए क्लाइमेट बहुत आवश्यक है जो कि कम से कम 1200 हाइट से ऊपर की हाइट होनी चाहिए अगर डाउन में करें तो इसकी क्वालिटी में फर्क पड़ता है और वैसे कीवी ठंडे क्षेत्र का फल होता है और शुरू में इसमें टाइम टेकिंग वर्क होता है और इसमें कम से कम 4 से 5 साल तो लग ही जाते हैं पौधे को मैच्योर होने में। और इसकी बेल होती है और यह 5 मीटर की दूरी में लगता है

फिर उसके बाद जैसे इसकी हाइट बढ़ती है फिर उसी के हिसाब से मेन ब्रांच को रखा जाता है और साइड की जो भी ब्रांच होती है सब काट दी जाती है उसकी कटिंग की जाती है और उसके बाद इसमें लोहे के एंगल लगते हैं जो कि टी-शेप में होते हैं जो की जहां बेल होगी वहां लगेगा और एक ठीक उसके सामने दूसरा पौधा होगा वहां पर लगेगा फिर उसके बीच तार डालना पड़ता है ताकि ऊपर से उसकी छत टाइप की बन जाए। फिर यहां की बेल उस साइड और वहां की बेल इस साइट को हम फैला सके।

आगे मदन जी कहते हैं कि कीवी मैं वैसे बीमारी नहीं आती है पर शुरू में जब हम पौधों को लगाते हैं तो उसमें दवाई का प्रयोग होता है वह भी इसलिए कि कोई फंगस ना लगे तो उसे बचाने के लिए और जब फ्लोरिंग होती है उस समय भी दवाई का प्रयोग कर सकते हैं और जो हमारे 100 पौधे खराब हुए थे वह पानी की कमी की वजह से हुए थे और शुरू में 400 पौधों की मेंटेनेंस करने में थोड़ी दिक्कतें हुई तो इस वजह से भी वह खराब हुए थे और इस में सिंचाई की जरूरत तब होती है जब तक पौधा जड़ ना डालें उसके बाद तो मौसमी बारिश होती है तो उसमें भी काम चल जाता है क्योंकि बेल बड़ी हो जाती है और उसकी जड़ें गहरी हो जाती है और मई तथा जून में थोड़ा बहुत पानी की जरूरत होती है तो उस समय सिंचाई की जरूरत पड़ती है।

और इसकी मार्केटिंग के लिए हम इसे एक तो डायरेक्ट फल बेच सकते हैं दूसरा इसका हम जूस हो गया चटनी हो गई उन चीजों में प्रयोग कर सकते हैं और कीवी को लोग डेंगू जैसी बीमारी में भी प्रयोग करते हैं और यह मार्केट में काफी महंगा भी बिकता है और इसकी जो नई बेल निकलती है उनकी फिर कटिंग करके नए प्लांट भी बना सकते हैं वह भी अच्छे खासे बिक जाते हैं एक पौधा लगभग 200 से 250 तक बिक जाता है।

डेयरी एंड आउटलेट ऑफ पहाड़ी प्रोडक्ट

आगे मदन जी कहते हैं कि हम इसके अलावा डेरी पर भी कार्य कर रहे हैं जो कि हमने सहकारिता के अंतर्गत शुरू में 2019 में डेयरी प्रोडक्ट से ही शुरू किया था और इसमें हम जो हमारे क्षेत्र में दुग्ध उत्पादक हैं उनसे दूध लेते हैं फिर उससे पनीर घी दही मट्ठा और डायरेक्ट दूध सेल करना हो गया यह सब कार्य कर रहे हैं और इन सब के लिए हमारा एक कलेक्शन सेंटर है जहां से हम फिर आगे इसको बेचते हैं और वर्तमान में हमसे दुग्ध उत्पादक वाले किसान लगभग 40 से 50 किसान जुड़े हुए हैं जिनसे हम यह सब चीजें लेते हैं और ज्यादातर हम गाय का दूध ही लेते हैं और इससे बने सभी प्रोडक्ट हम सहकारिता के नाम से ही बेचते हैं और आउटलेट

में हमारे सारे प्रोडक्ट बनते हैं इसके बाद आगे सेल होते हैं चाहे जूस हो कलर का कार्य हो डेरी का हो या फ्लोरीकल्चर का हो कीवी कल्टीवेशन का हो जो भी है यह सब सहकारिता के अंतर्गत ही होता है इसके अलावा अगर सीजन में कुछ चीजें नई आ जाती है तो उसमे भी कार्य करते है और कभी कुछ प्रोडक्ट हम इधर उधर से मंगा कर फिर आगे अपने आउटलेट में तैयार करके मार्केट में बेच देते हैं और हमारा आउटलेट थल में स्थित है।

भविष्य हेतु योजनाएँ :

मदन जी कहते हैं कि आने वाले टाइम में यही कोशिश है कि कुछ नहीं चीजों पर काम करें जैसे कि हमने अभी कीवी का प्लांट लगाया हुआ है तो हम चाहते हैं कीवी को बढ़ावा मिले इसके अलावा जूस फ्लोरीकल्चर रंग डेयरी आदि कार्य को भी बड़े पैमाने पर करें और जो रो मेटेरियल हम पहाड़ों से ले रहे हैं वह मार्केटिंग हो सके और प्रोसेसिंग हो सके।

समस्याएं :

मदन जी कहते हैं कि 2019 से जब से हमने यह कार्य शुरू किया था तो उसके बाद लॉक डाउन की स्थिति हो गई थी। और हम ने शुरू किया ही था और हमने ग्रोअप किया ही था। कि लॉकडाउन की वजह से सब कार्य बहुत धीमा हो गया जिससे हमारा जूस के क्षेत्र में कार्य बहुत धीमा रहा फिर हमारा जो फूलों का बहुत अच्छा कार्य चल रहा था। उसमें काफी नुकसान भी हुआ था।

इसके अलावा मेन समस्या लोगों तक पहुंचना लोगों को समझाना क्योंकि यहां पर ट्रेडिशनल खेती में बहुत ज्यादा काम होता है तो एक हटके दूसरे क्षेत्र में लोग जाना नहीं चाहते हैं तो लोगों को समझाना इस कार्य को करना यह सबसे बड़ी समस्या रही थी लेकिन धीरे-धीरे लोग समझ रहे हैं। सहकारिता से जुड़ रहे हैं।

Article written by:

Vipin Soni, Editor "The Pahadi Agriculture e-Magazine

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10089

स्वायत्त सहकारिता : सहकार से प्रगति

दीपक प्रसाद, गांव शाली स्टेट, ब्लॉक गरुड़, जिला बागेश्वर

औद्योगिक क्रांति के कारण आर्थिक तथा समाजिक असंतुलन के परिणाम स्वरूप भारत में वर्ष 1901 में एडवर्ड लॉ की अध्यक्षता में सहकारी समितियों के संगठनों की संभावना ओर सफ़लता पर रिपोर्ट के लिए समिति की स्थापना की गई तथा रिपोर्ट के आधार पर 1904 में सहकारी साख अधिनियम पास किया गया, तभी से सहकारी आंदोलन का प्रारंभ हुआ। पूँजीवादी देश जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका तथा जापान और समाजवादी देश दोनों प्रकार के देशों में सहकारी समितियों ने विशेष स्थान बना कर देश में उन्नति लाई है।

आज हम ऐसे ही स्वायत्त सहकारिता के बारे में बात करने वाले है जिसका नाम संजीवनी आजीविका स्वायत्त सहकारिता है जो की गरुड़ शांति बाजार बागेश्वर में स्थित है। दीपक जी कहते है की वर्तमान में यहां BC के पद पर हूं और यहां हम जो SHG ग्रुप की महिलाएं है जो सहकारिता में है जो उसके मेम्बर है तो उनसे हम लोकल उत्पाद खरीदते है जैसे मोटे अनाज दालें सब्जी जितने भी लोकल उत्पाद होते है उनको खरीदते है। जिससे जो महिलाएं सहकारिता से जुड़ी हुई है उनको भी एक अच्छा दाम मिल जाता है। और जो माल बेच के प्रॉफिट होता है वह उनको भी जाता है और सहकारिता को भी आता है।

आगे दीपक जी कहते है की कृषि उत्पादों के विपणन के लिए स्वायत्त सहकारिताओं के माध्यम से विपणन को बढ़ावा दिया जाता है जिसमें संबंधित क्षेत्र के किसानों की भगीदारी

होती है तथा किसानों को स्वयं के उत्पादों के विपणन हेतु सक्षम बनाने का प्रयास किया जाता है।

आगे दीपक जी कहते है की पहाड़ी उत्पाद जो हम खरीदते है उनसे फिर अचार भी बनाते है और अचार की हमारी खुद की यूनिट भी है।जैसे आंवला का अचार, आम का अचार, मिक्स अचार, तिमला का अचार आदि। महिलाए आती है गांव की अचार वही बनाते है और प्योर पहाड़ी उत्पादों से ही हम अचार बनाते है और फिर उसे मार्केट में सप्लाई करते है और यह भी हम 2016 से कर रहे है और इसमें वर्तमान में 448 सदस्य जुड़े हुए है और यह 8 ग्राम सभा में कार्य कर रहे है।और इसके लिए हमारे आउटलेट गरुड़ मार्केट में है। जहाँ 11 सहकारिता है और सबके अपने अपने आउटलेट बने हुए है जो की कृषि विभाग का है जो हमे मुहैया करवाए गए है। और हमारे यहां पर कमरे बने हुए है सभी अपने क्षेत्र से जिसके क्षेत्र में जो होता है। वह सब यही एकत्रित होता है और यही से ही आगे मार्केट में जाता है।

और लोकल उत्पाद से हम जूस भी बनाते है। जैसे बुरांश कीवी नींबू माल्टा आवला आम आदि का जूस बनाते है। और ये सब हम अपने आउटलेट में ही बनाते है ।

और पहाड़ी उत्पाद में जो हम किसानों से लेते है उनमें मुख्य मंडवा, बट, सोयाबीन मक्के का आटा जंगोरा, नौरंगी दाल, लाल चावल कावनी, और मल्टी ग्रेट आटा आदि है। और इनके लिए मार्केटिग अपने राज्य में तो सभी जिलों में है ही लेकिन इसके अलावा बाहर के राज्यों से भी इन पहाड़ी उत्पादों की डिमांड आती है।

जैसे बैंगलोर, महाराष्ट्र (वरदा), रुद्रप्रयाग,अल्मोड़ा, नैनीताल, हल्द्वानी, हरिद्वार, पिथौरागड़ आदि जगह से इन पहाड़ी उत्पादों की भारी डीमांड आती है।

आगे दीपक जी कहते है की जब ग्रुप लेबल की मीटिंग होती है तो हम लोगो को बताते है की सरकार की तरफ से यह यह स्कीम आई है हम लोगो समझाते है बताते है उन स्किमो में किसानों से काम करवाते। है हमारे यहां अच्छे अच्छे लेबल के किसान है जैसे एक हरी सिंह जी है जो डेयरी पे काम कार्य करते है। उन्हे अभी सहकारिता के माध्यम से एक 10 नाली का प्रोजेक्ट दिया गया जिसमे उन्हें गाय भी मिली है और पालीहाउस, मछली तालाब, और सब्जी उत्पादन का कार्य कर रहे है तो यह सब स्कीम जो होती है हम किसानों तक पहुंचाते। उन्हे खेती करने के लिए बोलते है।

फिर उचित दाम देके उनसे फसलें खरीद कर उनके तरह तरह के प्रोडक्ट अपनी यूनिट में तैयार किया जाता है फिर आगे यह सब चीजें मार्केट में बेच देते है। और किसानों को हम फसलों के दाम मार्केट के हिसाब से दो या चार रुपए ऊपर ही देते है। जिससे उन्हें भी फायदा होता है। और हर मेंबर खुश रहता है की मुझे यहां से कुछ ना कुछ मिल रहा है।

और पहले लोगो को मार्किटिग करने में दिक्कत आती थी यदि किसी किसान के पास 1kg है।तो वह सोचता था कि मार्केट में क्या ही ले जाए लेकिन 4 या 5 लोग मिलेंगे तो 10kg हो जाएगा और 10kg का मार्केट में अच्छा दाम मिल जाता है।

और लॉकडाउन के समय हमारा वार्षिक टन ओवर 6 लाख रुपये तक हुआ है और वर्तमान में लॉकडाउन के बाद हम अच्छा प्रोफिट ले रहे है।

भविष्य हेतु योजनाएँ:

दीपक जी कहते है की आज के समय नौकरी मिल नही रही है। जो हमारी बंजर जमीनें है। इनको आबाद करना है। और इस कार्य को और बड़े पैमाने पर करना है।अधिक से

अधिक लोगो को जोड़ना है।और लोगो को यही अपने क्षेत्र में ही रोजगार देना है। जो लोग 10 हजार की नौकरी करने के लिए बाहर जा रहे है। समस्या का सामना कर रहे है। उन्हे किसी ना किसी के माध्यम से जोड़ना है। चाहे सहकारिता के माध्यम से चाहे सरकार के माध्यम से जोड़ना है छोटे मोटे उद्योगों के माध्यम से लोगो को जोड़ कर उनको यही सशक्त बनाके आजीविका को बड़ाने का हमारा मुख्य उद्देश्य है।

जैसे मुर्गी पालन हो गया बकरी पालन, डेयरी, पाली हाउस और नाबार्ड के माध्यम से अभी 90% सब्सिडी मिल रही है। और इतनी चीजों के मिलने के बाद यही काम करे यही अपने बच्चो के साथ अपने परिवार के साथ रहे तो इन चीजों में हमारा ज्यादा फोकस है। की लोग बाहर न जाए अपना कल्चर अपने क्षेत्र को जोड़ के जो बंजर पड़ी जमीनें है उसको आबाद करे लोकल बाजार में मार्केटिंग करें।

अभी हम एफ. पी. ओ. की तरफ बड़ने की कोशिश कर रहे है।और इस साल हमने एफ पी ओ बनानी है जो हमारा इस साल का टारगेट है। जिसमें की बड़े लेबल पर कार्य होंगे सभी समान हम लोकल का यही खरीदेंगे और यही खरीद के उसे मार्केट किया जाएगा।

समस्याएं

शुरू में थोड़ी समस्या आती है इधर उधर जाना पड़ता है। एक तो हमारी भौगोलिक परिस्थिति ऐसी है। की गांव दूर दराज क्षेत्रों में है फिर लोगो को समझना इस चीज के बार में बताना एक समस्या रही है लेकिन अब लोग जुड़ रहे है हमारे ग्रुप से और हमे जैसे जैसे प्रोडक्ट की डिमांड आती है तो हम उन्हे फोन कर लेते है और हमारे हर गांव गांव में कलेक्शन सेंटर भी बने हुए है तो वह लोग वही सब एकत्रित कर देते है। और वहां से हम समान उठा लेट है और अपने आउटलेट ले आते है और आगे की प्रोसेसिंग करते है।

दीपक जी कहते है की अपनी ज़मीन और फसल बचानी है तो समाधान भी हमें ही ढूंढना पड़ेगा। समस्या का स्थाई समाधान यह है कि, हमें सामुदायिक रूप से जंगलों को संरक्षित करने में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना होगा। वन क्षेत्रों में फलदार पेड़ों का वृक्षारोपण करना होगा। यहाँ पर सामुदायिक रूप से इस लिए भी कहा जा रहा है कि, जंगलों में लगने वाली आग के लिए 90 प्रतिशत इंसान ही जिम्मेदार होता है।

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine **ISSN: 2583-7869**

Volume-1, Issue-4 **Article ID: 10090**

Pure and Fresh Products from Himalayas - HILANS Outlets

Gaurav Benjwal, Associate/Young Professional -Knowledge Management/IT, REAP-UGVS Project-Rudraprayag, Uttarakhand

Introduction:

As the name HILANS signifies "Highland Innovative Livelihood Ascending Nature Sustainability" is the umbrella brand developed under Rural Enterprise Acceleration Project – Uttarakhand Gramya Vikas Samiti (ILSP-UGVS).

When there was urgent need of the opportunities and potential possibilities to enable local farmers and villagers to generate a fruitful source of income, a joint initiative of Government of Uttarakhand and International Funds for Agricultural Development (IFAD) came up with REAP and ILSP.

Objective:

- The goal of the project is to enable households to take up sustainable livelihood opportunities integrated with the wider economy.
- To provide sustainable support to the blue prints of the project, HILANS outlets play a very important role in the same. Therefore, the flowchart of the project is designed in such a way that the households and the producer groups may get maximum support in the production and marketing of the local products to maximize the income.

S. No	Place of the Hilans	Operated by
1	**Hilans Outlet Rudrapryag (Shree Badrinath Road)**	Sanjeevani Swayatt sahkarita
2	**Hilans Outlet: GMVN Tilwara (Shree Kedarnath Road)**	Jagriti Swayatt Sahkarita

Challenges:

The most difficult part was to find the suitable target market to sell out the products/produce under the brand name of HILANS and to match the purchasing power of the customers as well. As the producer self-help groups were in the remote areas far away from the city. The people in the city were not able to avail the benefits of the pure and best quality of local/seasonal crops and other products/produce available in the villages. On the other hand, the producer groups were not getting good prices by selling their products because of lack of technical know-how i.e., proper sorting, grading, and packaging. So, the collective solution against the challenges was to set up the HILANS outlets.

Before project intervention:

The products were undoubtedly pure and up to the mark as the project itself supported the producer groups while implementing various advanced techniques of farming i.e., soil treatment, seed treatment, market driven hill suited verities like line sowing and inter cropping. The main problem was to market the local and regional products/produce into the market and to penetrate the market where various qualities of vegetables and fruits were already present. The difference between the local food products/produce produced by the producer groups and vegetables and fruits present in the market were:

1. Food products like vegetables, fruits and other crops produced by the producer groups were pure and traditionally grown-up natural fertilizers and certified seeds.
2. The products/produces were free from the chemicals and artificial colors and flavors.
3. The products/produces were directly from the soil without any kind of adulteration.

The main challenge was to find the target customers and provide them with the healthy food products/produces at reasonable cost.

After the project intervention:

The only way to resolve the problems and to cope up with the challenges in the field of marketing and business was to establish the chain of outlets under a single brand name for all the livelihood collectives. The brand name HILANS came up for rescue with the joint initiatives of the government of Uttarakhand and International Funds for Agricultural Development. Soon enough the problem of the marketing has been resolved and people started understanding the benefits of buying the pure local/regional products/produces from HILANS outlets.

District Project Management Unit Rudraprayag

Significance of the HILANS outlets:

- Better reach ability to the customers and potential market.
- Better promotion of the HILANS brand.
- Better recognition of the brand HILANS.
- Better brand positioning.
- Organized systematic market to sell local regional products/produces under a single brand name i.e., HILANS.

Scope:

- To promotion of HILANS Brand on various social media platform (Twitter, Facebook, Instagram, Linkedin, Youtube, Koo)
- To develop a chain of the outlets on a similar platform under an umbrella brand HILANS.
- Development of the website to sell out the products online.
- Promotion of HILANS Brand on various print Media (News Paper).

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10091

पहाड़ों में तेज पत्ते की खेती से कमा रहे हैं लाखों

पूरन सिंह कन्याल, गांव अटखेत, ब्लॉक डीडीहाट, जिला पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड़

दुनिया भर में प्राकृतिक उपचार और हर्बल उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है। नौकरी के बदले अपना काम करने की चाह रखने वाले लोगों यानी उद्यमियों की संख्या भी बढ़ रही है। ऐसे लोग इंटरनेट की मदद से खेती-किसानी में आधुनिक तकनीक के प्रयोग और कुछ इनोवेटिव आइडिया का इस्तेमाल कर कामयाब भी हो रहे हैं। ऐसे ही लोगों के लिए तेज पत्ते का पौधा उगाने (bay leaf farming) का विकल्प भी अच्छी कमाई का जरिया है। बागवानी और पेड़-पौधों में इंटरेस्ट लेने वाले लोगों के लिए सबसे जरूरी जानकारी यही है कि तेज पत्ते का पौधा कई वर्षों तक पत्तों से लदा रहता है। यानी दूसरी फसलों की तरह इसे हर साल लगाने के झंझट से मुक्ति। कॉमर्शियल तरीके से तेजपत्ते की खेती करने पर किसानों को जिंदगी भर मुनाफा मिल सकता है।

भारत में तेज पत्ते की खेती मसाले के रूप में की जाती है। यह एक ऐसा मसाला है जिसकी डिमांड हमेशा रहती है इसलिए किसान कम समय में और कम जगहों पर इसकी खेती कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं अब ज्यादातर किसान गेहूं-धान जैसी मुख्य फसलों को उगाने की बजाए औषधीय पौधों, मसाले वाली फसलों और फूलों आदि की खेती ओर ज्यादा रुख कर रहे हैं। इससे भरपूर लाभ कमा रहे हैं। तेज पत्ते का प्रयोग हम खाने में करते हैं और यह सेहत के लिए भी काफी फायदेमंद होता है।

तेज पत्ता की बढ़ती बाजार मांग के कारण तेज पत्ता की खेती मुनाफे का सौदा साबित हो रही है। तेज पत्ता की खेती करना बेहद ही सरल होने के साथ ही काफी सस्ता भी है। तेज पत्ता कई काम आता है। इसका हमारी खाने में उपयोग होने के साथ ही हमारी सेहत के लिए भी काफी फायदेमंद है। इसके अलावा तेज पत्ता का इस्तेमाल कई आध्यात्मिक कार्यों के लिए भी किया जाता है।

बहरहाल अभी बात हम इसकी खेती की करेंगे। ताकि किसान अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकें। इसकी खेती को प्रोत्साहित करने के लिए किसानों को राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

की ओर से 30 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है, जो किसानों के लिए एक बड़ी मदद होती है. इसकी खेती से किसान एक पौधे से करीब 3000 से 5000 रुपए तक प्रति वर्ष तथा इसी तरह के 25 पौधों से 75,000 से 1,25,000 रुपए हर साल कमाई कर सकते हैं।

आज हम ऐसी उद्यमी की बात करने वाले हैं जिन्होंने छोटे पैमाने से तेज पत्ते की खेती की शुरुआत की थी नाम पूरन सिंह कन्याल गांव अटखेत ब्लॉक डीडीहाट जिला पिथौरागढ़ के रहने वाले हैं ।कन्याल जी कहते हैं कि मैं तेज पत्ते की खेती 2012 से कर रहा हूं मेरा ट्रेवल्स का काम भी है मैं टैक्सी भी चलाता हूं और मेरी गाड़ी यहां से हल्द्वानी चलती है और हल्द्वानी में एक दिन क्या हुआ की गाड़ी में काम करवाना था तो हल्द्वानी से 7 से 8 किलोमीटर ऊपर भुजियाघाट नामक जगह है तो वहां हम खाना खाने बैठे तो मेरी नजर नाले के उस पार पड़ी तो मैंने देखा एक मकान था और मकान के चारों तरफ तेज पत्ते के पौधे लगे हुए थे तो मेरी जिज्ञासा हुई तो मैं देखने चला गया मैंने होटल वाले से पूछा कि क्या चीज है यह तो होटल वाले ने मुझे बताया कि यह तेजपत्ता है और इसे जंगली जानवर भी

नुकसान नहीं पहुंचाते हैं और बरसात को छोड़कर आप कभी भी इसको उगा सकते हैं और यदि उसका रेट भी मार्केट में नहीं है तो आप इसको क्लोज कर के कट्टों में भरकर अंदर रख लो जब रेट हो मार्केट में तब बेच दो तो मैंने उसे पूछा कि पौधे कहां मिलेंगे और हमारा क्षेत्र गर्म घाटी का क्षेत्र है यहां तेज पत्ते के पौधे होते ही नहीं थे तब होटल वाले ने मुझे बताया कि यहां से 5 से 7 किलोमीटर आगे एक नर्सरी है वह तेज पत्ते के पौधे बेचते हैं फिर मैं वहां चला गया नर्सरी वाले से संपर्क किया तो उसने बोला कि आप जुलाई में मिलो हमसे आपको जितने पौधे चाहिए होंगे मिल जाएंगे क्योंकि फर्स्ट साल में वहां से 100 पौधे लाया था और मैंने लीची का बगीचा भी बनाया है तो लीची के बगीचे के बीच में मैंने यह पौधे लगा दिए क्योंकि लीची के पौधों के बीच की दूरी 40 से 45 फीट रखनी पड़ती है जिससे उनके बीच काफी स्पेस था तो मैंने उनके बीच में 100 पौधे लगा दिए।

आगे कन्याल जी कहते है की इसके लिए मिट्टी मुख्य रूप से ऊसर और पथरीली जमीन इसके लिए अच्छी होती है। वैसे अब वैज्ञानिकों की मदद से इसे हर प्रकार की मिट्टी में उगाया जाने लगा है लेकिन उस जमीन का पीएच मान 6-8 के मध्य होना चाहिए। मिट्टी

सूखी तथा कार्बनिक पदार्थ से युक्त होनी चाहिए। इसके लिए मिट्टी की दो से तीन बार अच्छी तरह जुताई करनी चाहिए। और पौधों की रोपाई नए पौधे को लेयरिंग या कलम के द्वारा लगाना चाहिए। क्योंकि इसे बीज से उगाना मुश्किल होता है। इसके पौधे का रोपण करते समय पौधे से पौधे की दूरी 4 से 6 मीटर रखनी चाहिए। ध्यान रहे कि खेत में पानी की समुचित व्यवस्था हो। इन्हें पाले से भी बचाने की जरुरत होती है। और वैज्ञानिकों के अनुसार पौधे की समुचित विकास के लिए खाद और उर्वरक देना चाहिए। 20 किलो गोबर की खाद, 20 ग्राम नाइट्रोजन, 18 ग्राम फास्फोरस तथा 25 ग्राम पोटाश प्रति पौधा की दर से देना चाहिए। उर्वरक की मात्रा को समान भागों में बाटकर एक भाग को सितम्बर-अक्टूबर माह तथा दूसरे भाग को गोबर खाद की पूरी मात्रा के साथ मई-जून माह में देना चाहिए। खाद एवं उर्वरक की मात्रा हर साल आवश्यकता अनुसार बड़ा कर देना चाहिए।

आगे कन्याल जी कहते हैं कि इनकी ग्रोथ बड़ी अच्छी होती है जोकि 4 साल के अंदर पत्ते देना शुरू कर देते हैं जैसे हमने 2012 में इसकी खेती शुरू की तो 2015 या 16 में तेज पत्ते ने अपनी पहली फसल दे दी थी जिसमें एक पौधे ने 7 से 8kg तेज पत्ते का उत्पादन दिया फिर जैसे हर तीसरे साल हमने 2015 में इसके पत्ते काटे तो 2016 में उतना उत्पादन नहीं हुआ फिर 2017 में फसल हुई 1 साल बाद फसल तो सदाबहार ही रहती है लेकिन दूसरे साल कम मात्रा में फसल होती है लेकिन तीसरे साल तेज पत्ते का पौधा पूरी फसल देता है।

और इसकी समय पर छटाई करने से पेड़ों का विकास पूरी तरह होता है इसलिए समय-समय पर छटाई आवश्यक है। वैसे अलग से इसकी छटाई की आव्यशकता कम ही पड़ती है. तेजपत्ता का पौधा एक सदाबहार पौधा होता है, जिसमे पूरे साल पत्ते निकलते रहते हैं, पत्तों की तुड़ाई के बाद इन्हें सुखाकर इनका उपयोग कर सकते हैं।

शुरू में मैंने 100 पौधे लाए जो मुझे एक पौधा 5 रुपए का पड़ा था, जिससे मुझे अच्छा मुनाफा हुआ और उस समय 2 क्विंटल उत्पादन हुआ और मेरा हौसला भी बढ़ गया क्योंकि यह पौधा मरता नहीं है और ना ही इसे जंगली जानवर नुकसान पहुंचाते हैं तो मैंने दूसरे साल 500 पौधे और लाए धीरे-धीरे करके आज वर्तमान समय में मेरे पास 1500 पौधे हैं

और इसकी मार्केटिंग भी हल्द्वानी या रामनगर में ही होती है और इसे हम कट्टों में भरकर क्विंटल के हिसाब से भेजते हैं वर्तमान में 20 से 22 क्विंटल होता है जो कि आसपास के किसान ही खरीदारी करते हैं और मार्केट दूर होने के कारण हम नजदीक में ही बेच देते हैं जिसमें यह खरीददार 40 से 45 ₹प्रति kg हमसे खरीदते हैं। और मुझे तेज पत्ते की खेती के लिए राज्य पुरस्कार भी मिला है जो औषधीय वनस्पति मित्र पुरस्कार 2019 में मिला था।

आगे कन्याल जी कहते हैं कि जब हम तेज पत्ते को तोड़ कर लाते हैं तो हम उसका थोड़ा सा तना भी तोड़ कर लाते हैं यदि जैसे हमने प्योर पत्ते तोड़कर ला दिए हैं तो जो तना बच जाता है अगर उसके लिए ग्रेडिंग मशीन हो तो उसका चूरा बनाकर के मसालों के रूप में काम किया जा सकता है लेकिन हमारा यह वेस्ट ही चला जाता है लेकिन इसका चुरा बनाकर भी बेचा जा सकता है और इसमें वाष्पन विधि द्वारा तेज पत्ते का तेल निकाल सकते हैं जो कि 5 लाख ₹ प्रति लीटर तक चला जाता है लेकिन इसकी मशीन बहुत महंगी मिलती है जोकि 4लाख ₹ की मिलती है और उसमें दो फायदे होते हैं तेल और पत्ते दोनों बिक जाते हैं और मैंने इस मशीन के लिए कहीं जगह संपर्क किया अभी हाल ही में औषधि विभाग वालों से भी संपर्क किया है लेकिन उनकी तरफ से भी कोई रिस्पांस नहीं आया है कन्याल जी का कहना है कि अगर क्षेत्र में इस तरह की मशीन लगती है तो अन्य जो किसान है उनका भी फायदा हो जाएगा जो तेज पत्ते की खेती करते हैं और जब मशीन के लिए विभाग वालों को बोला था तो उनका कहना था कि 50 किसान बनाओ उसके बाद ही हम आपको मशीन देंगे पर यहां 50 किसानों को जोड़ना बहुत मुश्किल है क्योंकि पहाड़ों में 80%परसेंट लोगों ने पलायन कर लिया है 50 किसान मिलना बहुत मुश्किल है।

THE PAHADI AGRICULTRE
THE MOUNTAIN AGRICULTURE MAGAZINE

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine

ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4

Article ID: 10092

सब्जी उत्पादन से कमा रहे हैं लाखों

हयाद सिंह, गांव जयकोट, पोस्ट ऑफिस कैलाश, ब्लॉक धारचूला, जिला पिथौरागढ़

भारत एक प्रमुख सब्जी उत्पादक देश है। यहाँ सब्जियों की खेती पर्वतीय क्षेत्रों से लेकर समुद्र के तटवर्ती भागों तक सफलतापूर्वक की जाती है। हमारे देश की जलवायु में काफी भिन्नता होने के कारण देश के बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए इसे और बढ़ाने की आवश्कता है। हमारे देश में कुपोषण की समस्या से निपटा जा सकता है। सब्जियों के अधिक उत्पादन से जहाँ हम एक ओर अपने भोजन में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति हेतु अधिक सब्जी का प्रयोग कर सकेगें वहीं अतिरिक्त पैदावार को विदेशों में बेचकर पहले से कहीं अधिक विदेशी मुद्रा भी कमा सकेंगे।

आज हम ऐसे ही किसान के बारे में बात करने वाले हैं जो कोरोना महामारी के समय 2020 से सब्जी उत्पादन कर रहे हैं जो और आज के समय अच्छा मुनाफा ले रहे है। हयात सिंह गांव जयपकोट ब्लॉक धारचूला पोस्ट ऑफिस कैलाश जिला पिथौरागढ़ के रहने वाले हैं। हायद सिंह बीए और एम पास आउट है यह सब्जी उत्पादन 2020 से कर रहे है। इनका कहना है की सब्जी उत्पादन का काम हम लॉकडॉन से शुरू किया था। इसकी जानकारी मैने सबसे पहले उद्यान विभाग से ली थी और सब्जी उत्पादन के लिए मेने पहले से ही पॉलीहाउस के लिए अप्लाई किया हुआ था जो की मुझे 2020 में मिला और मेने सोचा की बेरोजगार तो हम है ही तो मेने अपने क्षेत्र में नजदीक के मार्केट में देखा सब्जी का कारोबार अच्छा चल रहा है तो हमने भी सब्जी उत्पादन करना शुरू किया। जिससे अपने लिए भी हो जायेगी और मार्केटिंग भी हो जायेगी। और मेने बड़े पॉलीहाउस के लिए अप्लाई किया था जो की मुझे किसी कारण से नहीं मिल पाया और वर्तमान समय में मेरे पास तीन पॉलीहाउस है जो की दो एक साथ लगाए।और एक पॉलीहाउस बाद में लगाया था। और इन तीनों पॉलीहाउस में हम अलग अलग सब्जी उगा रहे है। और हम

सीजन वाली सभी सब्जी उगाते है। जैसे शिमला मिर्च प्याज बैगन फुल गोबी। बंद गोभी कद्दू खीरा इत्यादि ।

शुरू में हमने 1 पॉलीहाउस में लगभग 5हजार रुपए तक की लागत लगाई थी। और तीनों पॉलीहाउस में 15 हजार करीब लागत लगी थी। जिसके अंदर हम शिमला मिर्च कद्दू ककड़ी गोभी तथा शिमला मिर्च के पौधे गोभी के पौधे तथा बैंगन के पौधे उगाते हैं। तथा हमारा शुरू में सब्जी से अच्छा उत्पादन हुआ जिससे हमारा शुरुआती साल में वार्षिक टर्नओवर 60 से 70 हजार तक हो गया था जो कि अब धीरे-धीरे इसमें भी सुधार हो रहा है।

और हयाद जी कहते हैं कि हमारा क्षेत्र दूरदराज क्षेत्र है यहां थोड़ा सब्जियों का बीज मिलना मुश्किल हो जाता है और बीज के लिए काफी इंतजार करना पड़ता है या खुद ही कहीं से लाना पड़ता है जिससे कुछ सीजन वाली फसल का समय चला जाता है और इसके अलावा सब्जी उत्पादन करना बहुत आसान है जिससे किसान कम समय में अच्छा उत्पादन ले सकते हैं और इससे पहले हमारे पिताजी साग सब्जियों की खेती करते थे और हमें अच्छी खासी जानकारी है तो हमे पता है की बीज कैसे डालते हैं और कौनसी फसल कब उगाते

है। इसके अलावा क्षेत्र में थोड़ी मार्केटिंग की हालत खराब है और यहां यातायात की सुविधा नहीं है जिससे रोड खराब होती है या बंद हो जाती है जिससे समस्या होती है और 2022 अगस्त में भी लगभग 5 कुंतल बैंगन रोड बंद हो जाने के कारण सड़ गई थी।

और मार्केट हमारे यहां से 28 किलोमीटर दूर है और वहां ले जाना पड़ता है सब्जी को बेचने के लिए अभी हाल ही में हमारे पास एक से डेढ़ क्विंटल कद्दू था लेकिन मार्केटिंग दूर होने के कारण सही समय पर मार्केट नहीं पहुंच पाया जिस से डेढ़ क्विंटल कद्दू ऐसे ही बर्बाद हो गया है और फिर आसपास के लोगों को ही देना पड़ा और गांव में यह नहीं बिकता है। सब्जी उत्पादन के अलावा हयाद जी 2022 अगस्त से (ULM) एनजीओ से भी जुड़े हुए है। और यह गांव गांव में जाके सब्जी उत्पादन की ट्रेनिंग भी देते है।

और आगे हयाद जी कहते है की अभी हाल ही मेने एक 3 नाली का खेत को तैयार किया हुआ है जिसमे गांव के समूह की मदद से इस खेत में गुलाब की खेती करुगा।

हयाद जी कहते हैं कि सब्जी उत्पादन के अलावा हमारे पास घराट भी है जो कि हमारे पास बहुत पहले से ही है जो आज वर्तमान समय में भी चालू है और उस घराट का रजिस्ट्रेशन हमने अपनी माता जी के नाम से करवाया है और हम घराट को तकरीबन 25 साल से चला रहे हैं जबकि बीच में प्राकृतिक आपदा के कारण यह ध्वस्त भी हो गया था, लेकिन हमने दुबारा इसे नए सिरे से बनाया है और गर्मियों में पानी की थोड़ी असुविधा रहती है तो नेपाल बॉर्डर के पास होने के कारण मैंने नेपाल से दो बड़े पाइप मंगवाए हैं जो कि 35 35 मीटर के हैं और पूरे साल घराट चलाने के लिए हमने घराट तक इन पाइपों की मदद से पानी लाया है और वर्तमान समय में लगभग 3 गांव के लोग हमारे घराट में ही आटा पीसवाते हैं जिससे कि हमरा अच्छा खासा मुनाफा हो जाता है इनका कहना है कि इस घराट से ही मेरा परिवार पल रहा है और इससे मैं कभी नहीं छोड़ सकता और हम आटा कभी मार्केट से नहीं खरीदते हैं। घराट से ही हो जाता है। लेकिन आजकल के समय में थोड़ा हमारे क्षेत्र में चक्की का बोलबाला ज्यादा हो गया है लेकिन हमारे क्षेत्र में आज भी लोग घराट के आटे को ही पसंद करते हैं तो अभी हमारे यहां अभी इतना नहीं हुआ है

कि लोग घराट से अलग हो जाए लेकिन आने वाले समय में हमें लगता है कि आधुनिक तकनीकी और मशीनों के कारण लोग घराट से अलग हो जाएंगे लेकिन हम फिर भी इसमें निरंतर कार्य करते रहेंगे।

इसके अलावा हयात जी मछली पालन भी कर रहे हैं जो कि यह 2016 से कर रहे हैं लेकिन प्राकृतिक आपदा के कारण टैंक में पानी अधिक भर जाने से टैंक अभी खराब की स्थिति में है नहीं तो हम मछली उत्पादन से भी अच्छा खासा मुनाफा ले रहे थे मैंने पिथौरागढ़ जिले में एप्लीकेशन भी दी थी मैंने उन्हें रिपेयरिंग के लिए कहा था लेकिन उन्होंने इस पर कोई कार्रवाई नहीं की उन्होंने कहा कि दोबारा रिपेयरिंग नहीं होगी नया टैंक बनवाना पड़ेगा । और वर्तमान समय में मछली तो है लेकिन आय का स्रोत नहीं है लेकिन जब नया टैंकर आएगा तभी इसे बड़े पैमाने से शुरू करूंगा।

भविष्य हेतु योजनाएँ :

हयात जी कहते हैं कि भविष्य में सोचा है कि सब्जी उत्पादन को और बढ़ावा देना है इससे बड़े पैमाने पर करना है अभी तो हम कम पैमाने पर ही कर रहे हैं लेकिन आगे हम इसको बड़े पैमाने पर करेंगे क्योंकि जमीन हमारी बहुत है अगर अच्छे तरीके से करें तो सब्जी उत्पादन से अच्छा मुनाफा ले सकते हैं और इसके अतिरिक्त हम मोटे अनाजों की खेती भी करते हैं और अभी सरकार भी मोटे अनाजों को प्रोत्साहित कर रही है तो इसमें भी जो फसलें हमने पहले करना छोड़ दी थी अब वह भी हम धीरे-धीरे करना शुरू करेंगे।

THE PAHADI AGRICULTURE
THE MOUNTAIN AGRICULTURE MAGAZINE

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10093

उत्तराखंड में अब पहाड़ों में भी गन्ने की खेती की तैयारी

पूरन सिंह कन्याल, गांव अटखेत, ब्लॉक डीडीहाट, जिला पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड़

उत्तराखंड में अब पहाड़ों में गन्ने की खेती करने की तैयारियां चल रही है। गन्ना विकास विभाग ने इसलिए पिथौरागढ़ जिले के कुछ पहाड़ी इलाकों का चयन कर गन्ने के बीज उपलब्ध कराए है। हिंदुस्तान में प्रकाशित खबर के अनुसार, सरकार का मकसद पहाड़ों में चीनी की निर्भरता को कम कर गुड़ को बढ़ावा देना है। गढ़वाल के चमोली जनपद में भी इस पायलट प्रोजेक्ट पर काम किया जाएगा। गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग आयुक्त हंसा दत्त पांडेय के निर्देश पर गन्ना विकास विभाग राज्य के पिथौरागढ़ जनपद के डुंडा, सन, समतरा, पाली, समिथुल, कनालीछीना, मुवानी, पैय्यापोरी, पंचोली, समति, डुंगी, भंडार गांव, आठखेत, रकनाबिन, सांगरी, मिर्थी, भल्या, थरकोट, बलबिर, हड़खोला, मलन, मुनस्यारी जैसे गांवों में गन्ने की खेती की तैयारी कर रहा है। इसके लिए तक़रीबन 200 किसानों को नवीनतम व अधिक शर्करा वाली गन्ना प्रजातियां केपीबी 96 उपलब्ध कराया गया है।

पिथौरागढ़ जिला भारत के उत्तराखंड राज्य का सबसे पूर्वी हिमालयी जिला है। यह प्राकृतिक रूप से उच्च हिमालयी पहाड़ों, बर्फ से ढकी चोटियों, दर्रों, घाटियों, अल्पाइन घास के मैदानों, जंगलों, झरनों, बारहमासी नदियों, ग्लेशियरों और झरनों से घिरा हुआ है। पिथौरागढ़ जिले में नेपाल और तिब्बत जैसे देशों की अंतर्राष्ट्रीय सीमा भी हैं।

पिथौरागढ़ समुद्र तल से 1645 मीटर की उंचाई पर स्थित है। पिथौरागढ़ का क्षेत्रफल 2,788 वर्ग मील है, पिथौरागढ़ का अधिकांश भाग पहाड़ी और ऊबड़-खाबड़ है। जबकि गन्ने की फसल ऐसी जंगह पर होती है जहां पर लंबे समय तक गर्मी और पर्याप्त धूप आती है, साथ ही इसे बारिश की भी जरुरत होती है। पिथौरागढ़ एक पहाड़ी इलाका है, लेकिन इसके बावजूद भी यहां बरसों से गन्ने की खेती होती आ रही है।

आज हम ऐसे ही उद्यमी के बात करने वाले हैं जो पिथौरागढ़ में गन्ने की खेती कर रहे हैं नाम पूरन सिंह कन्याल गांव अटखेत ब्लॉक डीडीहाट जिला पिथौरागढ़ के रहने वाले हैं।

पूरन सिंह कन्याल जी कहते हैं कि गन्ना विकास समिति ने 480₹ कुंटल बीज हमे दिया और में 2021 से गन्ने की खेती कर रहा हूं शुरू में हमने 5 नाली में गन्ने की खेती की जिसमें 5 नाली से 15 कुंटल उत्पादन हमने किया इसके अतिरिक्त मैंने 3 कुंटल बीच मुवानी से तथा कुछ कनालीछीना से लाया जो कि गन्ना विकास समिति ने ही वहां पर रख वाया था और मुझे गन्ने की खेती में इंटरेस्ट था तो मैं वहां से भी बीज लेकर आ गया और उसके बाद हमने इसकी खेती शुरू की।कन्याल जी कहते हैं कि गन्ने की खेती पहाड़ों में करने से किसान थोड़ा सा घबराते हैं क्योंकि गन्ने की फसल के लिए पानी तथा इसकी देखरेख करना थोड़ा कठिन होता है शुरू में जब मैंने इसकी खेती शुरू की थी तो मुझे बताया गया था कि इसकी खेती करने से पहले इसके बीच का शोधन करना आवश्यक होता है किंतु यहां दवाइयां आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाती है तो हमने इसका शोधन गोमूत्र मे किया इसके बाद इसकी खेती शुरू की और उन्होंने कहा कि इसकी खेती के लिए गन्ना टुकड़ा के रूप में लगता है जिसके लिए बीज का शोधन करना अति आवश्यक होता है किंतु असुविधाएं होने के कारण हमने गोमूत्र में ही इसके बीज का शोधन किया जो कि 24 घंटे तक गोमूत्र में डूबा कर रखना होता है और उसके बाद उसे सुखाकर फिर बोया जाता है। और शुरू में मैंने सिर्फ पांच नाली भूमि में ही इसकी खेती शुरू करी थी जिसमें बीज की मात्रा 4 से 5 क्विंटल बीज की मात्रा लग गई थी। क्योंकि शुरू में गन्ने की खेती की जानकारी थोड़ी कम थी इतना ज्ञान नहीं था कि बीच कितना और कितनी दूरी पर बोना सही रहेगा तो ज्ञान की जानकारी ना होने पर शुरू में 4 से 5 कुंटल बीज लग गया था इसके बाद कुछ बीज मर भी गए थे तथा कुछ सिंचाई की अच्छी व्यवस्था या पानी उचित मात्रा में नहीं मिल पाया और कुछ बीज को जंगली जानवरों ने भी अधिक मात्रा में नुकसान पहुंचाया है जैसे जंगली सूअर बंदर इत्यादि और ज्ञान के अभाव में हमने गन्ने की खेती थोड़ी घणी कर दी।

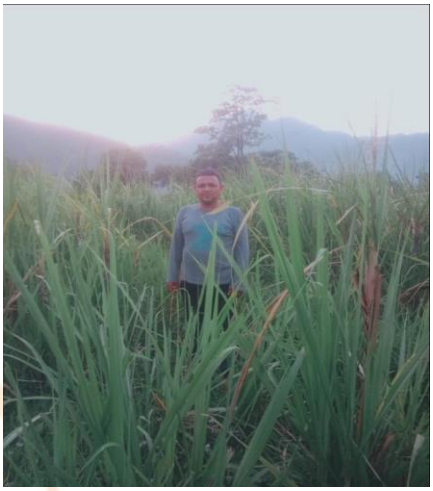

और आगे कन्याल जी कहते हैं कि गन्ने की खेती 12 महीने की होती है जिसमें मेहनत वह देखरेख लगती है और इसकी फसल साल में सिर्फ एक बार ही होती है यह कहते हैं कि 2021 में हमने शुगर को बोया तो 2022 में इसकी पहली फसल बेची थी। और जो हमने पहली फसल में गन्ने के बीज बोए थे इत्तेफाक से वह बीच अच्छी गुणवत्ता का था जो यहां पहाड़ों में फैलाना था तो मैंने जब अपनी फसल किसानों के ग्रुप में इसकी फोटोस डाली तो जो गन्ना प्रवेशक या जो गन्ना वैज्ञानिक थे तो उनका मुझे फोन आया कि यह तो अच्छा किस्म का गन्ना है इसे आप अपने क्षेत्र में जितने भी छोटे बड़े किसान हैं उन तक इसे फैलाओ उन्हें दो उन्हें इसकी खेती करने के लिए बोलो क्योंकि यह गन्ने की अच्छी प्रजाति है जो पहाड़ों में इसका उत्पादन अच्छा हो सकता है।

जब हमने पहली फसल से उत्पादन लिया तो 15 कुंटल हुआ जिसमें हमने 4 क्विंटल बीज बोया। और इसका बीज हरा आता है जो पत्ते सहित होता है जो कि एक कुंटल में 20 से 25 kg कम हो जाता है जो कि 80 से 82 kg ही होता है 4 क्विंटल बीज पर 3 गुना मुनाफा हुआ।

आगे कन्याल जी कहते हैं कि हमारे क्षेत्र पहाड़ों में गन्ने की खेती की अभी शुरुआत ही हुई है जिसके कारण इसके लिए दवाई खाद समय पर नहीं मिल पाती है और शहर भी हमारे क्षेत्र से बहुत दूर है तो हम इसके लिए गोमूत्र, गुड़, बेसन का ही उपयोग करते हैं वैसे भी पहाड़ों में बीमारी ज्यादा नहीं लगती है अगर किसी पौधे पर रोग कीट या कोई बीमारी लगती है तो हम उस पौधे को ही काट के फेंक देते हैं और हमारे यहां गन्ने की

खेती के लिए सिंचाई की अच्छी सुविधा भी है इसके साथ में मछली उत्पादन भी करता हूं तो उसका निकासी का पानी भी सिंचाई के रूप में उपयोग में आ जाता है।

और जो हमारी पहली फसल हुई थी जितना भी उत्पादन हुआ था तो मैंने अपने क्षेत्र में ही किसानों को अपनी फसल बेची जिसमें मैने नए किसान और जोड़ें तथा पहली फसल से मुझे अच्छी मात्रा में मुनाफा भी हुआ और मैंने यह किसानों को बीज के रूप में ही बेचा था और हाल ही में मैंने 3 क्विंटल बीज की मात्रा और बढ़ाई है पहले तो 4 से 5 क्विंटल बीज बोया था। उसके बाद मैंने 3 कुंटल इसमें और बढ़ाया है और एक से डेढ़ कुंटल अभी बचा हुआ है जो बोने के लिए रखा हुआ है।

भविष्य हेतु योजना:

कन्याल जी कहते है की भविष्य के लिए में गन्ने के जूस पर कार्य करूंगा क्योंकि हमारे क्षेत्र से गन्ने की मार्केटिंग बहुत दूर हो जाती है जिसे ले जाने में ही अधिक मात्रा में खर्च आ जाता है तो मैं सोच रहा हूं कि जितना भी मेरा उत्पादन होता है उसका मैं यहीं पर जूस और गुड़ के रूप में उपयोग में लाऊं और उसके लिए हमने अभी मशीन की बात की है अगर मिल जाती है तो मैं लोकल में ही गन्ने के जूस का कारोबार की सोच रहा हूं आगे कन्याल जी कहते हैं कि पहाड़ों में गन्ना होता नहीं है बहुत कम मात्रा में होता है और जूस के हिसाब से उतना उत्पादन नहीं हो पाता है यहां तथा इसके अलावा गुड पापड़ी के बारे में 2024 तक सोचा है कि इस पर भी कार्य करूंगा जाडे में गुड़ पापड़ी का कारोबार किया जाएगा। और गर्मियों में जूस का काम किया जाएगा।

बाकी यहां दवाइयों की समस्या आती है और हल्द्वानी यहां से 300 किलोमीटर दूर है और हमारे यहां से गन्ने की मंडी हल्द्वानी में ही है और जो कि यहां से बहुत दूर है जिससे कि यातायात में ही अधिक खर्च आ जाता है इसलिए मैंने जूस और गुड़ पापड़ी के लिए सोचा है कि 50 से 100 किलोमीटर के दायरे में जूस व गुड़ पापड़ी का कारोबार किया जाए।

http://pahadiagromagazine.in

The Pahadi Agriculture e-Magazine ISSN: 2583-7869

Volume-1, Issue-4 Article ID: 10094

मिलेट्स / श्री अन्न से बना रहे हैं सौंदर्य उत्पाद

ऋषि भटनागर, गांव- गैड़, जिला- देहरादून, राज्य- उत्तराखण्ड

एक समय था जब दक्षिण भारत और उत्तर भारत के कई राज्यों में मोटे अनाज की खेती होती थी लेकिन लोगों का पाश्चात्य संस्कृति एवं खान-पान के साथ सुनिश्चित बाजार न होने के कारण से किसानों ने मोटे अनाज की खेती से मुंह मोड़ लिया, लेकिन एक बार फिर किसान इसकी खेती की तरफ लौट रहे हैं, आज के समय में लोग मोटे अनाज को ना केवल खाने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं, बल्कि इनसे अन्य कई उत्पाद भी बना रहे हैं आज के समय में मोटे अनाजों से कई खाद्य, सौंदर्य उत्पाद जैसे अनेक चीजें बन रही है ऐसे ही एक प्रगतिशील किसान है ऋषि भटनागर |

ऋषि जी ग्राम गैड, जिला देहरादून के रहने वाले निवासी हैं, यह मिलेट्स से और जड़ी बूटियों से सौंदर्य उत्पाद बनाते हैं इनका कहना है देहरादून में इनका अपना पर्सनल एक घर लिया हुआ है जो कि भगवानदास कोटल के नाम से है यह देहरादून घंटाघर के पास स्थित है वही यहां सामान को इक्कट्ठा कर उसकी पैकेजिंग, संरक्षण इत्यादि करते हैं |

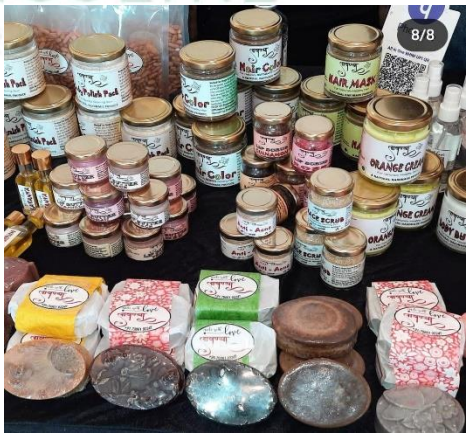

ऋषि जी का कहना है कि इस व्यवसाय में यह दो लोग जुड़े हुए हैं, इनके साथ मेघा जी इनकी पार्टनर है एवं अपने साथ इन्होंने अन्य 12 से 13 लोगों को रोजगार दिया हुआ है, इनका कहना है इन्होंने यह व्यवसाय कोरोनाकाल के अंतर्गत शुरू किया था पहले इनका देहरादून में अपना रेस्टोरेंट था पर कोरोना की वजह से उनको रेस्टोरेंट बंद करना पड़ा उसके बाद उन्होंने अपने कृषि से संबंधित कुछ करने की सोची जिससे पहाड़ भी बच जाए गांव में भी लोगों को रोजगार मिले साथ ही गांव की जमीन भी बंजर ना रहे इसलिए ऋषि जी और उनके साथी मेघा जी ने मिलेट्स से कई सौंदर्य उत्पाद बनाने की सोची, इनका कहना है गांव में इन्होंने अपनी जमीनों में मिलेट्स की खेती की हुई है

वहां उनके गांव में महिलाएं खेती करती है उसके बाद वह महिलाओं से सामान इकट्ठा कर उत्पाद बनाते हैं सौंदर्य उत्पाद में वह कई उत्पाद जैसे फेस वॉश, फेस स्क्रब, लिप बाम, सिरम, फेस क्रीम , साबुन इत्यादि उत्पाद बनाते हैं बाजार में इनके उत्पाद लावण्या

ब्यूटी प्रोडक्ट के नाम से बिकते हैं

चुनौतियां- ऋषि जी का कहना है कि जब उन्होंने इस काम की शुरुआत की तो उनको काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा सबसे पहले तो गांव में लोगों को समझाना पड़ा कि उनको मिलेट्स की खेती की तरफ जागरूक होना है, उसके बाद लोगों से सामान इकट्ठा करने में परेशानी आई उसके बाद सामान की पैकेजिंग कैसे करनी है कौन सा उत्पाद का कितने दिन तक सरंक्षण करना है कि कौन से उत्पाद के लिए कितना तापमान चाहिए इन सब बातों को समझने में भी इनको काफी परेशानी आई उसके बाद इनका कहना है इनको प्रिंटिंग के लिए दिक्कत आई प्रिंटिंग में कौन सा डिजाइन छापना है यह सब सोचने के लिए भी काफी समय लगा उसके बाद मार्केटिंग ज्ञान, मार्केटिंग बनाने में भी समय लगा इनका कहना है इन्होंने छोटे से छोटे मेलों में इन्होंने अपने स्टाल लगाए वहां से इन्होंने कस्टमर बनाए और आज के समय में इनके उत्पाद ना सिर्फ देहरादून में बल्कि दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, हैदराबाद अनेक जगहों में बिकते हैं |

“द पहाड़ी एग्रिकल्चर”

ई-पत्रिका

‘पर्वतीय कृषि की ऑनलाइन मासिक पत्रिका’

संपर्क सूत्र:

+91 9412383468

pahadiagriculture@gmail.com

http://pahadiagromagazine.in